ਯੁਕ੍ਰਾਂਦ

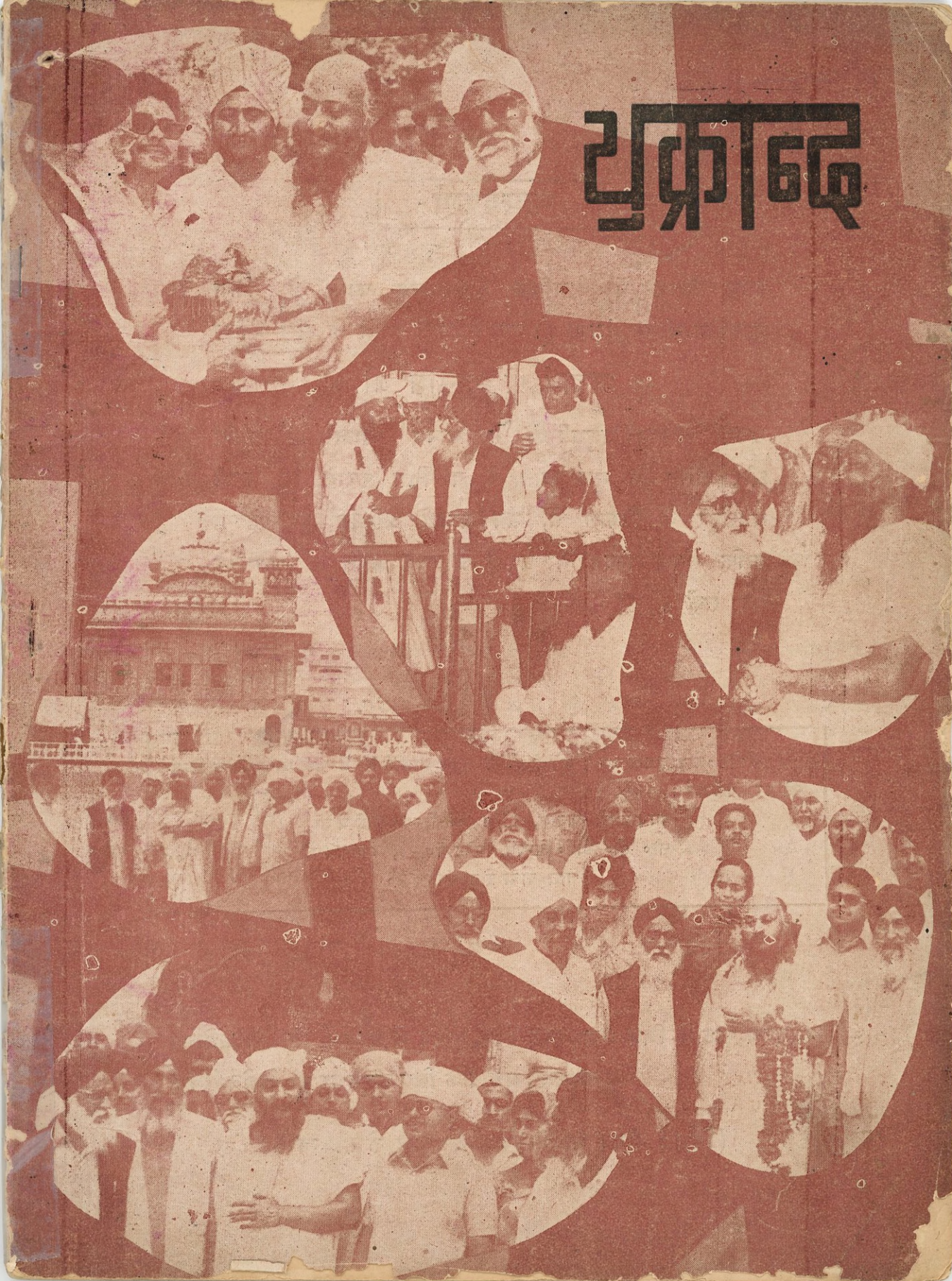

महत्वपूर्ण

आज विश्व में वैज्ञानिक सृजनात्मक क्रांति के बिना मानवीय जीवन संत्रास्त हो उठा है, उसी क्रांति के मूल प्रणेता

● आचार्य श्री रजनीश जी ●

अपनी जीवन्त अनुभूतियों से मानव जीवन को आनंद और शांति के मल स्रोत से परिचित कराने हेतु, अपने जबलपुर के निवास से, अब बम्बई प्रस्थित हो रहे हैं ताकि संपूर्ण विश्व में अपनी अभिनव क्रांति को प्रसारित कर सकें ।

(नोट : अतः कृपया अब १ जुलाई ७० से पूज्य आचार्य श्री से पत्र व्यवहार हेतु निम्न पते पर संपर्क करें :

आचार्य श्री रजनीश, C/o श्री हिम्मत भाई जोशी,
सी० सी० आई० चेम्बर्स, फ्लेट नं० २७, ४था फ्लोर,
दीनशा वाचा रोड, बंबई : २०

आवरण पृष्ठ के चित्र : अमृतसर स्वर्ण मंदिर में आचार्य श्री का अभिनव स्वागत । युक्रांद के लिए अमृतसर की विशेष रिपोर्ट
(पृष्ठ १५ पर)

(चित्र : जीवन जागृति केंद्र, अमृतसर के सौजन्य से)

धार्मिक चित्त : अंतस् की गहराई

(आचार्य श्री के दो उद्‌बोधन : श्री हरिकिशनदास अग्रवाल के प्रश्नों पर)

आपने पूछा है : "धार्मिक व्यक्ति का जीवन कैसा होता है ।"

पहली बात तो यह कि धार्मिक व्यक्ति के जीवन में व्यवहारिक और पारमार्थिक ऐसे खंड नहीं होते हैं । धार्मिक जीवन अखंड जीवन है । जहाँ खंड है वहाँ धर्म नहीं है । खंडित चित्त ही तो रोग है । वही तो अधर्म है ।

दूसरी बात यह है कि धार्मिक व्यक्ति का स्वयं का जीवन भी नहीं होता है । क्योंकि स्व के मिटने से ही तो वह धर्म को उपलब्ध होता है । धार्मिक व्यक्ति स्वयं नहीं जीता है । उसमें तो प्रभु ही जीता है । धार्मिक व्यक्ति तो बन जाता है बस माध्यम । बांसुरी ही रह जाता है वह । स्वर संगीत उसमें से बहते हैं, लेकिन वे उसके ही नहीं होते हैं ।

तीसरी बात यह है कि धार्मिक जीवन के प्रकार नहीं होते हैं । जैसे सागरों का पानी सब जगह खारा है ऐसे ही धार्मिक जीवन का स्वाद भी सब जगहों और सब कालों में एक जैसा ही है । धर्म की अंतरात्मा सदा--सर्वदा एक है, एकरस है ।

चौथी बात यह है कि आपका सवाल बाहर से पूछा गया है । धर्म के वर्तुल में प्रवेश करते ही ऐसे सवाल तत्काल गिर जाते हैं । धर्म अनुभूति में अद्वैत है । लेकिन, बुद्धि अपनी सीमा में प्रत्येक विषय को अनिवार्यतः खंड-खंड कर देती है । क्योंकि विचार की प्रक्रिया ही विश्लेषण है । अनुभूति सदा संश्लिष्ट (Synthetic) और विचार है विश्लेषण (Analysis) । इसलिये, अनुभूति (experiencing) और विचार (thinking) का कहीं भी मिलन नहीं होता है । अनुभूति में परमार्थ और व्यवहार एक है, ब्रम्ह और माया एक है, परमात्मा और पदार्थ एक है, मुक्ति और बंधन एक है । लेकिन बीच में जरा सा विचार कि सब ! तत्काल दो हो जाते हैं । और विचार जिन्हें भी तोड़ता है, उनके बीच अलंघ्य खाई हो जाती है । फिर विचार उन्हें जोड़ने की कोशिश में पड़ता है । लेकिन, यह काम व्यर्थ है । क्योंकि, विचार ही तो खाई है । विचार जोड़ नहीं सकता, बस केवल तोड़ ही सकता है । विचार का जहाँ अभाव है, वहाँ जोड़ है । वस्तुतः वहाँ कभी कुछ टूटा ही नहीं है ।

और पाँचवी बात यह है कि जानना है तो सोचें मत, जियें । सोचना जीने से बचने की तरकीब है । सोचना है सदा तट पर और जीवन है सदा सागर की गहराइयों में ।

छोड़ें तट और कूदें सागर में । कितने जन्मों-जन्मों से तो आप सोच रहे हैं । मैं कब से आपको तट पर ही देख रहा हूं । अब बहुत हुआ । अब तो कूदें । देखें-सुनें कबीर क्या कह रहे हैं : "जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ । मैं बौरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ ।"

●

आपने पूछा है : "कहीं कहीं धर्म और व्यवहार में विरोध खड़ा होजाता है ? ऐसी परिस्थिति में सही मार्ग क्या है ?"

पहली बात तो यह है कि धर्म और व्यवहार में कभी भी विरोध खड़ा नहीं होता है। वह असम्भावना है। जैसे प्रकाश और अंधकार में कभी भी विरोध खड़ा नहीं होता है ऐसे ही, जहाँ प्रकाश है, वहाँ अंधकार है ही नहीं। तब विरोध खड़ा हो ही कैसे सकता है। उपस्थिति प्रकाश और अनुपस्थिति अंधकार में तो विरोध असंभव ही है न। विरोध के लिये कम से कम दोनों को उपस्थिति तो एक ही साथ होनी चाहिये न। और ऐसा कभी भी नहीं होता है। जहां प्रकाश है, वहाँ अंधकार नहीं है। जहाँ प्रकाश नहीं है, वहाँ अंधकार है। असल में अधकार का अर्थ ही है, प्रकाश का न होना। उसकी अपनी कोई सत्ता नहीं है। वह तो बस अभाव है किसी का, अनुपस्थिति (Absence) है किसी का। ऐसा ही व्यवहार है। ऐसा ही संसार है। ऐसा ही अज्ञान है। ऐसा ही अधर्म है। वे सब धर्म की अनुपस्थिति के भिन्न-भिन्न नाम हैं। जब धर्म आता है, तब वे बस चुपचाप नहीं हो जाते हैं। धर्म नहीं है, तभी तक वे हैं।

दूसरी बात यह है कि उधार, सुने हुए धर्म को हम धर्म मान लेते हैं। इससे ही कठिनाइयाँ खड़ी होती हैं। साधारणतः हमारे लिये व्यवहार तो है सत्य और धर्म है कोरा शब्द। इसीलिये ही दोनों में विरोध खड़ा होता है। और ध्यान रहे यह कहीं--कहीं नहीं, कभी--कभी नहीं, वरन् हर कहीं और हर पल खड़ा होता है। यही स्वाभाविक है। यही होगा भी। क्योंकि अंधकार है वास्तविक और प्रकाश है केवल विश्वास। विश्वास अंधकार को तो मिटाता ही नहीं उलटे हमें और अंधा कर जाता है। प्रकाश चाहिये प्रकाश का विश्वास नहीं। प्रकाश के विश्वास से अंधकार नहीं मिटता है। धर्म चाहिए, धर्म का विश्वास नहीं। धर्म से व्यवहार रुपांतरित होता है और परमार्थ व्यवहार एक ही हो जाते हैं। या ऐसा कहें तो भी ठीक है कि व्यवहार विलीन ही हो जाता है। और जो शेष रह जाता है, उसमें कोई द्वन्द नहीं है, द्वैत नहीं है, इसलिये कोई दुविधा भी नहीं है।

तीसरी बात यह है कि अलग--अलग परिस्थिति में अलग--अलग मार्ग नहीं हैं, और न अलग--अलग सहीपन है। मार्ग तो एक ही है। और जो सही है वह भी एक ही है। और उस एक का नाम ही धर्म है। उसे जानते ही सभी परिस्थितियाँ मूलतः समान हो जाती हैं। आकार तो उनके भिन्न रहते हैं लेकिन आत्मा भिन्न नहीं रह जाती है। जैसे एक अंधा आदमी सोच सकता है कि अलग--अलग अंधकारों में अलग--अलग प्रकाश आवश्यक होते होंगे। या अलग स्थितियों में मार्ग खोजने के लिए अलग--अलग आंख होती होंगी, ऐसे ही हमारा यह सोचना है।

चौथी बात यह है कि धर्म को खोजें। धर्म और व्यवहार में सामंजस्य को नहीं। वैसे सामंजस्य की खोज ही बताती है कि धर्म का अभी पता नहीं है। धर्म के आगमन पर तो कभी भी सामंजस्य नहीं खोजना पड़ता है। क्योंकि, सामंजस्य के लिए भी वैसा ही द्वैत आवश्यक है जैसा कि संघर्ष के लिए। और धर्म का आगमन अद्वैत का आगमन है। फिर तो जो भी है वही परमार्थ है और वही व्यवहार है। धर्म का आगमन अविरोध का आगमन है। इसलिए फिर न विरोध है किसी से, न सामंजस्य की आवश्यकता है।

पाँचवीं बात यह है कि धर्म को स्वयं को छोड़ और कहीं न खोजें। क्योंकि और कहीं भी मिले धर्म से आपकी समस्या नहीं मिट सकती है। वस्तुतः तो और कहीं से मिले धर्म से ही तो वह समस्या पैदा हुई है। उधार धर्म अनिवार्यतः समस्या है। और ऐसी समस्या जिसका कि कोई समाधान नहीं है। क्योंकि उधार धर्म स्वयं को समाधान मान लेता है, जो कि वह है नहीं। और ऐसी समस्या का कोई भी समाधान नहीं है जो कि स्वयं को ही समाधान मानती है। ऐसी बीमारी का इलाज ही क्या हो सकता है जो कि स्वयं को स्वास्थ्य समझती है। लेकिन स्वयं धर्म निश्चय ही समाधान है पर वह मिलता है समाधि से। समाधि के अतिरिक्त समाधान और कहीं से मिल भी कैसे सकता है। धर्म को खोजें अर्थात समाधि को खोजें। शास्त्र से बचें, शब्द से बचें विचार से बचें। निर्विचार में ही द्वार है। शून्य में ही सत्य है। यही है धर्म। उसे जानकर फिर कुछ भी जानने को शेष नहीं रह जाता है। और उसे जानते ही सब समस्याएँ गिर जाती हैं, सब सवाल मिट जाते हैं।

●●

परमात्मा की यात्रा आकाशगामी है : उसका मार्ग आपको स्वयं खोजना पड़ता है

संकलन : श्री सरदारीलाल सहगल, अमृतसर

पूछा है कि मानव कल्याण के लिए वेद मार्ग ही सत्य मार्ग है, ऐसा आपका विश्वास है या नहीं ?

मेरा कोई विश्वास ही नहीं। और अगर कोई विश्वास रखता है तो अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है। यदि ज्ञान की तरफ जाना हो तो सब विश्वास छोड़ देने पड़ते हैं। इसका यह मतलब नहीं है कि अविश्वास पकड़ लेने पड़ते हैं। अविश्वास भी एक ढंग का विश्वास ही है। आस्तिक का भी विश्वास होता है नास्तिक का भी विश्वास होता हैं, दोनों विश्वासी होते हैं। आस्तिक मानता है कि ईश्वर है। नास्तिक मानता है कि ईश्वर नहीं है और दोनों की मान्यताएं अंधेरे में खड़ी होती हैं। आस्तिक को पता नहीं है कि ईश्वर है और मानता है और विश्वास करता है। नास्तिक को यह पता नहीं कि ईश्वर नही है पर मानता है और विश्वास करता है। लेकिन जो जान लेता है न वो आस्तिक रह जाता है और न वो नास्तिक रह जाता है। लेकिन जो जान लेता है वो यह भी नहीं कहेगा। हां यह भी नहीं कहेगा कि ना। और यह हां भी जाने बिना कहता है और न भी जाने बिना कहता है क्योंकि उस बड़े सत्य में हां और न दोनों समा जाते हैं उसमें आस्तिक और नास्तिक दोनों ही समा जाते हैं।

एक गांव में एक बार एक बड़ा ऐसा उपद्रव हो गया था। कि उस गांव में एक आस्तिक था और एक नास्तिक था और दोनों के विवाद से सारा गांव बहुत परेशान था। आस्तिक लोगों को समझाता था कि ईश्वर है और नास्तिक लोगों को समझाता था कि ईश्वर नहीं। और बात यहां तक बढ़ गई कि लोगों को काम करना ही मुश्किल हो गया। सिद्धान्तों, धर्मों और नियमों के कारण सारी दुनिया में ऐसा हो जाता है, दुनिया को काम करना ही मुश्किल हो जाता है। इस गांव में भी बड़ी तकलीफ हो गई थी। उस गाँव के लोगों ने कहा कि हम बहुत मुश्किल में पड़ गए हैं तुम दोनों विवाद कर लो। तुम दोनों में से जो जीत जायेगा हम बात मान लेंगे। आस्तिक और नास्तिक का विवाद हुआ, पूर्णिमा की रात थी सारा गाँव इकट्ठा हुआ, लेकिन सुबह मुसीबत वैसी की वैसी ही रही फर्क बहुत बढ़ गया लेकिन मुसीबत वही थी। नास्तिक ने बड़ी अद्भुत दलीलें दी ईश्वर के नहीं होने की कि आस्तिक उसकी दलीलों से राजी हो गया और आस्तिक ने ऐसी दलीलें दीं ईश्वर के होने की कि नास्तिक उनसे राजी हो गया। रात भर में जो आस्तिक था वो नास्तिक हो गया जो नास्तिक था वो आस्तिक हो गया लेकिन गाँव की मुसीबत वैसी की वैसी रही।

अमल में, आस्तिक नास्तिक पल भर में बनते हैं वो एक दूसरे में बदले जा सकते हैं। आस्तिक कभी भी नास्तिक बन सकता है क्योंकि ज्ञान उसके साथ नहीं। नास्तिक कभी भी आस्तिक बन सकता है क्योंकि ज्ञान उसके पास भी नहीं। लेकिन जिसके पास ज्ञान है वो न आस्तिक बन सकता है और न नास्तिक बन सकता है। विश्वास मे मेरी वृत्ति ही नहीं। मेरा जोर है जानने के लिए, मानने के लिए नहीं। जब मुझसे कोई पूछता

है कि आप इसको मानते हैं कि नहीं मानते हैं ? तो असल में वो एबसर्ड प्रश्न पूछता है। मैं मानता ही नहीं इसमें भूल क्या है ? मेरा जोर यह है कि मानना ही अन्धेपन का आधार है। जो मानता है वो अंधा हो जाता है। जानना हो तो मानने की लकीर से ऊपर उठना पड़ेगा। जानना हो तो सब विश्वास, सब दलील सब डिसक्विलीफ, सब अविश्वास छोड़ देने पड़ेंगे। क्योंकि जानने के लिए हम उसमें समर्थ हैं जिसका कोई आग्रह नहीं, निग्रह चित्त चाहिए। यह न कहें कि सत्य ऐसा है, ऐसा मैं पहले से ही मानता हूं यदि आप पहले से ही मानते हैं कि सत्य ऐसा है तो फिर आप खोजेंगे कैसे ? जो यह कहता है कि मेरी कोई मान्यता नहीं है सब जैसा है मैं उसे वैसा जानने को तैयार हूं, लेकिन कोई मान्यता नहीं, मेरा पहले से कोई पक्षपात नहीं है। ऐसे निर्दोष चित्त में ही सत्य की छवि बनती है अन्यथा नहीं। देखें एक फोटो का कैमरा है जो कि फोटो लेता है उसमें एक प्लेट लगा होता है वो प्लेट बहुत जल्दी मान लेता है बहुत ब्लीविंग है। जो शकल दिख जाती है वो उसी को पकड़ लेता है, लेकिन दर्पण भी है उसके सामने से कितनी भी शक्लें दीखें वो सब निकल जाती हैं। वो मानता किसी को भी नहीं है। दर्पण के सामने सब शक्लें निकल जाती हैं वो निरंतर खाली होता रहता है। फोटो के प्लेट की तरह आपका चित्त है तो आप सत्य को कभी नहीं जान पायेंगे तो फिर जो शक्ल आपके चित्त में आ जायेगी आप उसे ही पकड़ लेंगे। एक आदमी हिन्दू के घर में पैदा होता है यह सिर्फ फोकस की बात है उसके चित्त के सामने गीता आ गई है रामायण आ गई है हिन्दू धर्म आ गया है। उसने उसको पकड़ लिया है। एक आदमी मुसलमान घर में पैदा होता है उसने कुरान को पकड़ लिया है। एक जैन घर में पैदा होता है उसने महावीर को पकड़ लिया है। एक्सप्लोजर हो गया है उसके दिमाग में, उसको पकड़ लिया है और फिर जिन्दगी भर उसको पकड़े रहता है वो सत्य को नहीं जान सकेगा। सत्य को केवल वही जान सकेगा जिनका चित्त दर्पण की भांति खाली होगा। चीजें आती हैं और चली जाती हैं और वो खाली हो जाता है। इतना निर्दोष, इतना पक्षपात हीन चित्त हो तो उस सत्य को जाना जा सकता है। इसलिए यह मत मुझसे पूछो कि मैं वेद मार्ग को मानता हूं कि नहीं ? मैं कुछ भी नही मानता। वेद मार्ग का सवाल ही नहीं, कुछ भी नहीं मानता। जो जानता हूं वो आपसे कहता हूं, जो नहीं जानता हूं उसकी बात नहीं कहता। मानने के लिए गुंजाइश मैंने नहीं छोड़ी। एक अंधा आदमी मानता है कि प्रकाश है कि नहीं। और आंख वाला आदमी मानता नहीं वो जानता है। आपने कभी प्रकाश पर विश्वास किया, आप कभी पूछते हो सूरज को मानते हो कि नहीं ? उसे हम जानते हैं तो मानने का सवाल ही नहीं उठता। एक अंधा आदमी पूछ सकता है दूसरे अंधे आदमी से कि तुम प्रकाश को मानते हो ? एक अंधा कहता है मानता हूं दूसरा अंधा कह सकता है कि नहीं मानता हूं। दोनों अंधे हैं और दोनों की बातों का एक ही मतलब, माने या न माने। फर्क क्या पड़ता है ? दुनिया में कितने आस्तिक हैं क्या फर्क पड़ता है ? कितने नास्तिक हैं, क्या फर्क पड़ता है ? रूस के नास्तिक हो जाने से क्या फर्क पड़ गया है उसको और हम आस्तिक हैं तो क्या फर्क पड़ गया है कोई फर्क नहीं पड़ता हमारे मानने से। फर्क पड़ता है जानने से। ज्ञान क्रांति है विश्वास अंधापन है। और मैं कुछ भी नहीं मानता।

दूसरी बात उन्होंने पूछी है कि क्या वेद मार्ग कल्याणकारी है, – असल मे सत्य की दिशा में, परमात्मा की दिशा में कोई मार्ग ही नहीं बंधा हुआ, सीमित या सोचा हुआ। परमात्मा की दिशा में जो जाता है वो आकाश में उड़ते हुए पक्षियों की भांति है, जिसके पैरों के कोई चिन्ह नहीं छूट जाते। जमीन पर चलने वाली यात्रा नहीं, जहां पगडंडिया बन जाती हैं रास्ते बन जाते हैं। इसलिए कोई लोग जो परमात्मा तक पहुंचते हैं कोई लकीरें नहीं छोड़ जाते जिन पर आप चल सकें। आप को अपना रास्ता फिर खोजना पड़ता है, जैसे पक्षियों को अपना रास्ता खोजना पड़ता है। परमात्मा की यात्रा आकाशगामी है। जमीन पर चलने वाली, रहने वाली, यात्रा नहीं। और दूसरी बात यह है कि परमात्मा का

कोई उसका पक्का मकान नहीं है कि पता लगा लिया जाये वो यहां रहता है और हम वहां पहुंच जायें। रास्ता बना ले कोई ऐसी जगह नहीं है जहाँ हम रास्ता बना लें। परमात्मा जीवन की प्रक्रिया है, वो जीवन है वो रोज नया होता है रोज प्रगट होता है। कल हमने जैसा उसे पाया था आज वैसा नहीं पायेंगे। और हम वहीं देखेंगे तो पायेंगे, कि वो वहाँ नहीं है। उसे रोज रोज खोजना पड़ता है इसलिए हर युग को अपना धर्म खोजना पड़ता है सब धर्म बासे पड़ जाते हैं सब आऊट आफ डेट हो जाते है, और अगर हम उन्हीं पर ही चलते जाते हैं तो हम भटकते हैं। ध्यान रहे कि परमात्मा के संबध में हमारी दृष्टि कुछ ऐसी है जैसा वो जगत से अलग होकर कहीं बैठा हो। जहां हमें जाना पड़ेगा। इसे थोड़ा समझना उचित है। एक आदमी मूर्ति बनाता है पत्थर की। मूर्तिकार मूर्ति को बनाता है। मूर्ति अलग है मूर्तिकार अलग है। मूर्तिकार मर जाय तो भी मूर्ति रहेगी मूर्ति का अलग अस्तित्व है। अब तक दुनिया में हमने भगवान को इसी तरह सोचा है कि वो बनाने वाला है तो इसका मतलब यह है कि अगर भगवान मर भी जाय तो यह जगत रहेगा अगर भगवान न भी रहे तो भी यह जगत रहेगा। मूर्ति रहेंगी मूर्तिकार से कोई सम्बन्ध नहीं। उसका मतलब यह है कि मूर्तिकार मूर्ति को बना कर अपने से अलग कर देता है मूर्ति का अपना अस्तित्व है। वो नहीं समझता कि ऐसी स्थिति है जैसे मैं जानता हूं वो स्थिति बहुत दूसरी है, मूर्तिकार और मूर्ति जैसी नहीं। नृत्यकार और नृत्य जैसी है। एक नृत्यकार नाच रहा है और हम नृत्य को अलग नहीं कर सकते उससे। अगर नृत्यकार चला जायेगा तो नृत्य भी चला जायेगा, अगर नृत्य चला जायेगा तो नृत्यकार बिदा हो जायेगा। नृत्य और नर्तक एक हैं। परमात्मा और प्रकृति दो नहीं हैं कि वो कहीं बैठा है और हम वहाँ पहुंच जायेंगे। सृष्टा और सृजन दो नहीं हैं। सृजन और सृष्टा एक ही है। और इसलिए परमात्मा प्रतिक्षण सर्जन कर रहा है और प्रकट हो रहा है, नृत्यकार की भांति। इसलिए आप उसे कभी बैठा हुआ नहीं पायेंगे। वो जीवन में सब तरफ फैला हुआ है सब तरफ वही है। अगर समव्हेयर, Somewhere जाना हो, कहीं जाना हो तो रास्ता हो सकता है और अगर एवरीव्हेयर, Everywhere जाना हो तो रास्ता नहीं होगा अगर मुझे आपके घर आना है मैं आ सकता हूं क्योंकि समव्हेयर है, आपका घर है लेकिन परमात्मा का घर तो एवरीव्हेयर है। परमात्मा का घर कहीं नहीं है क्योंकि सब कहीं उसका घर है। नहीं, कोई रास्ता उसके घर तक नहीं ले जाता या यह कहें कि सभी रास्ते उसके घर तक ले जाते हैं। दोनों बातें हो सकती हैं। इसे समझना बहुत ठीक है रास्तों की जो जिद्द है हमारी, कि वेद का मार्ग ठीक है कि कुरान का मार्ग ठीक है कि महावीर का मार्ग ठीक है कि बुद्ध का मार्ग। यह ऐसा है परमात्मा कि सब मार्ग वहाँ पहुंचा सकते हैं और वो ऐसा है कोई मार्ग वहां तक नहीं पहुंचा सकता। आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं वो आपके पास ही खड़ा हुआ है। मार्ग की जरूरत हीं नहीं रहेगी मार्ग तो उसे बोलते हैं जो हमसे दूर हो। फासले में हो। अगर आपके और मेरे बीच फासला हो तो रास्ता बन सकता है और अगर आपके और मेरे बीच फासला ही नहीं तो रास्ता कैसे बनेगा? परमात्मा और हमारे बीच फासला है? अगर फासला है तो रास्ते भी जरूर होंगे। अगर फासला नहीं है तो रास्ते की जरूरत नहीं हैं। फासला नहीं है। हम रोज कहते हैं कि वो सब के भीतर मौजूद है और फिर भी कहते हैं कि रास्ता है वेद मार्ग, कुरान मार्ग, जैन मार्ग, हिन्दू मार्ग, बौद्ध मार्ग, ईसाई मार्ग। यह मार्ग नहीं, क्योंकि उसके और हमारे बीच कोई फासला नहीं। मार्ग से उस तक नहीं पहुंचा जा सकता। उस तक पहुंचना हो तो एक्सप्लोजन विस्फोट की जरूरत है मार्ग की नहीं। आंख खोलें और जानने की जरूरत है वो यहीं मौजूद है अभी और यहीं। कल की जरूरत नहीं परसों की भी जरूरत नहीं, वो सदा ही मौजूद है। मार्ग नहीं हैं उस तक पहुंचने के लिए। लेकिन मार्ग हमें बताये गए क्योंकि हम सोच ही नहीं सकते कि बिना मार्ग के भी कहीं पहुंचा जा सकता है। हमारे सोचने की जो प्रक्रिया है दो मार्गों से बंधी हुई है क्योंकि जिन्दगी में हर तरफ मार्ग होते हैं। कहीं जाना है, गांव से दूसरे

गांव तो मार्ग होता है लेकिन यह कहीं जाने का मामला ही नहीं, हमें वहीं पहुंचना है जहां हम हैं ही। बड़ी कठिन बात है वहीं पहुंचना है जहां हम हैं ही। जिस दिन बुद्ध को ज्ञान हुआ लोगों ने जाकर बुद्ध से पूछा आपको क्या मिल गया ? तो बुद्ध ने कहा मिला कुछ भी नहीं खो बहुत कुछ गया है। लोगों ने कहा कि क्या मतलब हुआ आपने इतनी मेहनत उठाई, इतना श्रम किया, इतनी साधना की और अब कहते हैं कि मिला कुछ भी नहीं तो बुद्ध ने कहा हां, मैं कहता हूं मिला कुछ भी नहीं क्योंकि जो आज मुझे दिखाई पड़ा वो सदा से मिला ही हुआ था। मिला और कुछ भी नहीं सिर्फ एक भ्रम खो गया है मेरा, कि मेरे पास कुछ भी नहीं यह भ्रम भर मेरा खो गया। जो था वो था, जब मैं नहीं जानता था तब भी था अब मैं जानता हूं तब भी है। उसके होने में कोई फर्क नहीं पड़ा सिर्फ मैं भूल गया था क्योंकि यह सिर्फ विस्मृति है परमात्मा तक पहुंचने मे कोई रास्ता नहीं था, सिर्फ एक प्रयास ही था। सिर्फ विस्मृति है। वो विस्मृति है बहुत अद्भुत। दूसरे महायुद्ध में ऐसा हुआ कि एक आदमी चोट खा गया सब नाम पता ठिकाना भूल गया सिर में चोट लगी थी उसके और स्मृति खो गई। अगर अकेले स्मृति खो जाती तो कोई हर्ज नहीं था अगर उसका नम्बर मिल जाता तो रजिस्टर में उसका नाम मिल जाता। पर उसका नम्बर भी खो गया था जब उसे बेहोश लाया गया तो उसका कोई नम्बर न था और जब वो होश में आया तो उससे पूछा गया कि कौन हो तुम तो उसने कहा मुझे कुछ पता नहीं चलता कि मैं कौन हूं ? वो उनसे पूछता है कि मैं कौन हूं, बड़ी मुश्किल हो गई। कुछ तो याद करो अपने पिता का नाम अपनी माता का नाम वो उसने कहा मेरे पिता भी हैं ? मेरी माँ भी हैं ? कहाँ हैं वो ? क्या किया जाय ? बड़ी मुश्किल हो गई तो उन मनोविज्ञानकों ने कहा कि इस आदमी को दस पच्चीस गांवों में ले जाया जाय। ब्रिट्रेन का जो आदमी था दस पच्चीस गांव में ले जाया जाय तो शायद वो अपना नम्बर पहचान ले। तो उसे गांव गांव ले गए सब थक गए और उसे जगह जगह रोका गया और खड़ा किया जाता तो वो कहता मुझे कहाँ ले आये ? एक छोटे से गांव से ट्रेन गुजर रही थी। वहाँ रुकने का भी ख्याल नहीं था, ट्रेन वहाँ रुकी थी पत्थर लगा था स्टेशन का। उस आदमी ने झाँक कर देखा और उसने कहा कि मेरा गांव ? ट्रेन से कूद पड़ा। मनोवैज्ञानिक जो उसको लेकर के जा रहे थे उसके पीछे भागे वो अन्दर गांव मे पहुंच गया यह रहा मेरा घर, यह रहा मेरा स्कूल फिर वो अपने घर पहुंचा और उसने कहा यह है मेरी माँ। उन मनोविज्ञानिकों ने कहा इस आदमी ने खोया कुछ भी न था सिर्फ स्मरण खोया था।

परमात्मा के संबध में हमने भी कुछ खोया नहीं, सिर्फ स्मरण खोया है। सिर्फ स्मरण, जरा सा मोड़ और स्मरण आ जाये तो द्वार खुल जाता है। कहीं जाना नहीं, जागना है। कहीं पहुंचना नही सिर्फ होश में आना है उसी के प्रति जहां हम हैं। मार्ग की बात ही व्यर्थ है। मार्ग का तो कोई मतलब ही नहीं है। मतलब बस जागने का, नींद से जागने का। होश से भरने का। अब होश से भरने की क्या तरकीब लगाई जा सकेगी ? हिन्दू की, मुसलमान की, या ईसाई की। जब आप सुबह नींद से जगते हैं तो कौन सी तरकीब लगाते हैं जागने की। हिन्दू की, मुसलमान की या ईसाई की। हिन्दू और ढंग से जगता है ? मुसलमान और ढंग से जगता है ? ईसाई और ढग से जगता है ? जरा पूछें सोने वाले आदमी से कि तुम्हारा मैथड क्या है जागने की तुम्हारी विधि क्या है। तुम क्या वेद मार्ग से जागते हो या जैन मार्ग से जागते हो या बुद्ध मार्ग से जागते हो, तुम किस के मार्ग से जागते हो वो आदमी कहेगा हम सिर्फ जग जाते हैं, मार्ग की जरूरत क्या है ? हम सोये थे अब जग जाते हैं मार्ग की जरूरत क्या है। ठीक कोई आदमी कभी परम सत्य की ओर जागता है तो किसी मार्ग से जागता है। नींद की परेशानी से जागता है नींद के पूरे हो जाने से जागता है। नींद की पीड़ा से जागता है। नींद के दुःख से जागता है। मार्ग से नहीं। अगर जिस जगत में हम जी रहे, सोये सोये अगर वो जगत हमें दुःखपूर्ण हो जाय अगर वो जगत हमें ऐथिड बन जाय पीड़ा बन जाय जिसे हम जीवन

कह रहे हैं अगर वो जीवन हमें जीवन न रह जाय तो फिर हमें जागना ही पड़ेगा फिर उपाय नहीं है सोने का। क्योंकि हम सोये इसलिए हैं कि यह बड़ा सुखद मालूम पड़ रहा है, बड़े सुख के सपने देख रहे हैं और सो रहे हैं अगर हमारे सुख के सपने टूट जायें तो हमें जागना ही पड़ेगा। क्या आपको पता है कि हम सपने क्यों देखते हैं। हम सपने इसलिए देखते हैं कि हमारी नींद न टूट जाये। सपना जो है वो नींद को तरकीब है, नींद को जारी रखने के लिए। एक आदमी को प्यास लगी, वो सपना देखता है कि मैं पानी पी रहा हूं तो नींद नहीं टूटती और अगर उसे प्यास लगे और सपना न दिखे तो नींद फौरन टूट जायेगी। लेकिन सपना देखता है कि पानी पिया और उसकी नींद वैसी की वैसी बनी रहेगी। सपना जो है सब्स्टिट्यूट है। कम्पलीमेंटरी है। वो नींद को बनाये रखने की सुविधा है। एक आदमी को पिशाब लगी वो सपने में देखता है कि वो बाथरूम पहुंच गया है वो सपने में पिशाब करता है और अगर सपना न देखे तो उसे नींद से उठना पड़ेगा। क्योंकि जब वो पीड़ा से भर जाये तो उसको जागना ही पड़ेगा। सपना हम देखते हैं इसलिए कि नींद सुविधापूर्ण हो जाय। इस बड़ी दुनियां में हम बड़े सपने देखते हैं ताकि जाग न जायें। और हम बड़े अद्भुत सपने देखते हैं कोई आदमी सपने देख रहा है धन के, कोई यश के और अगर हमारे सपने बाहर निकाले जायें तो हम दंग रह जायें यह देखके कि हर आदमी ऐसे सपने देख रहा है।

गांधी जी इंग्लैंड गये थे। गांधीजी के एक शिष्य बर्नार्ड शा को मिलने गये। उनने पूछा बर्नाड शा से कि गांधीजी यहां आये हुए हैं आप महात्मा को महात्मा मानते हैं कि नहीं? गांधीजी के शिष्यों को यह बड़ी फिक्र रहती है कि दूसरों से सार्टिफिकेट लाये कि वो फलां को मानते हैं कि नहीं। बड़ी चिन्ता रहती है। यह तो पागलपन की चिन्ता है कि आप फलाने को मानते हैं कि नहीं। क्या मतलब? बर्नाड शा ने कहा मानता हूं गांधीजी बड़े अच्छे महात्मा है लेकिन नम्बर दो। शिष्य ने कहा नम्बर दो। हमने तो नम्बर एक महात्मा सुना नहीं। बर्नाड शा ने कहा कि जार्ज बर्नाड शा। मैं नम्बर एक महात्मा हूं। दो महात्मा हैं दुनिया में एक मैं और दूसरा तुम्हारा गांधी। शिष्य तो बड़ा हैरान हो गया, बड़ा परेशान हो गया। क्या कहे इस आदमी से ज अपने मुंह से कह रहा है मैं नम्बर एक महात्मा हूं। ता जब उसने कुछ साहस जुटा कर कहा आप भी कैसे आदमी हो। तो उसने कहा कि मैं सच्चा आदमी हूं मैं अपने सपने खोलकर बता देता हूं। मेरा मन तो यही है नम्बर एक होने का। हां बाकी दूसरे लोग छुपाये रखते हैं मैं खोलकर बता देता हूं नम्बर एक ही हूं नम्बर दो तो मैं हो नहीं सकता। माना हुआ सपना है तुम इसकी फिक्र न करो हर आदमी सपने से जुड़ा हुआ है सिकन्दर होने का, हिटलर होने का, नामालूम क्या-क्या होने का। इन सपनों की, इन सपनों की वजह से नींद नहीं टूटती। इसलिए कोई मार्ग नहीं पहुंचायेगा वहां तक। यह सुखद सपने समझने पड़ेंगे। यह सपने क्या हैं सुखद हों या दुखद। यह सपने ही हैं। कब तक सपने टूट जाते हैं, अब सब सपने झूठे हैं। एक बात तो यह स्पष्ट हो जाये यह सब सपने झूठे हैं और चाहे नींद को कितना ही लम्बा कर लो सपने से कुछ मिलने वाला नहीं, सपने बिलकुल बांझ हैं। उनसे कुछ निकलता ही नहीं। रात भर सपने में थे बहुत अच्छा लगता है, सुबह नींद खुली वहीं के वहीं रह गया। कोई फर्क नहीं पड़ता। सत्य तक पहुंचने में कोई बाधा नहीं है सिवाय सपने के। अब यह बड़े मजे की बात है कि अगर सपने से बाहर आना हो तो सपने में ही रास्ता अपनाना पड़ेगा? अगर सपने से बाहर आना हो, और रास्ता बनाना हो तो सपने में ही रास्ता बनेगा। अब सपने में बना हुआ रास्ता सपने से बाहर कैसे जायेगा? सपने में बना रास्ता सपने से बाहर नहीं ला सकता। सपने से बाहर आना हो तो बाहर ही आना पड़ेगा बिना किसी रास्ते से। जागना पड़ेगा। जागने का एक ही उपाय है कि सपना पीड़ा बन जाय। तकलीफ बन जाय दुख बन जाय। ताकि जाग जायें। जिनके लिए जिसे हम जीवन कहते हैं वो दुख हो जाता है। जिनके लिए जिसे हम जीवन कहते हैं, वो पीड़ा हो जाता है, वो जाग ही जाते हैं सोये

रहने का उपाय ही नहीं। मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या आपको जीवन का दुःख दिखाई पड़ता है। अगर वो दिखाई पड़े अगर आपको जीवन के कांटे अनुभव होते हैं। क्या आपका जीवन प्रतिपल मृत्यु की ओर चला जा रहा है। इसका अनुभव होता है तो आप जाग ही जायेंगे। न किसी विधि की जरूरत है न किसी मार्ग की। न किसी मन्दिर की, न किसी पण्डित की, न किसी गुरू की, न किसी शास्त्र की। सब सपने मिट जायें। क्योंकि सपने में किया हुआ कृत्य आपको सपने से बाहर नहीं ला सकेगा। सपने दुखद हो जायें, तो सपने से बाहर होने की शुरूआत है। आप बाहर होना शुरू हो गए और यह एक बार मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आपको यह भी पता चल जाय कि यह सपना है जिससे आप बाहर हो जायें। कभी आपने ख्याल किया है कि रात आप सपना देखते हैं और आपको पता चलता है कि यह सपना है और हमे पता चल जाय तो इसका मतलब है कि बात शुरू हो गई है आप जाग रहे हैं। जाग चुके हैं। नहीं सपने में सपना, सपना नहीं मालूम पड़ता सत्य ही मालूम पड़ता है जब तक सपना चलता है तब तक जो है वो सत्य है। अगर जरा सा भी शक आ जाय तो नींद टूटना शुरू हो गई। और आज यह ख्याल आ जाये तो यह सपना ही है तो आप जाग ही चुके हैं। यह जिन्दगी क्या आपको सपना मालूम पड़ती है और सपना मालूम पड़ती है तो आप जागना शुरू हो गए हैं। अगर जिन्दगी आपको सपना मालूम नहीं होती तब आप और सपने में गहरे डूबे हैं कोई मार्ग वहां से नहीं निकाल सकेगा। कोई आपको बाहर नहीं निकाल सकेगा। नहीं, मैं किसी मार्ग पर विश्वास नही करता हूं मैं तो केवल दुःख में विश्वास करता हूं। मनुष्य का दुःख ही उस पार ले जाता है लेकिन हम बड़े चालाक लोग हैं हम दुःख को छिपा लेते हैं।

हम अपने दुख को पूरी तरह देखते नहीं, रास्ते में आपको कोई मिलता है पूछता है कि कैसे हैं, तो आप कहते हैं (ओ. के.) बिल्कुल ठीक हैं। आपने कभी पूछा, पूछा है भीतर कि आप जो कहते हैं वो सत्य है। यह आप क्या कह रहे है कि बिल्कुल ठीक हूं मैं। आप और बिल्कुल ठीक ? फिर तो दुनियां में कोई दुःख ही न रह जाय क्योंकि सभी बोलते हैं कि बिल्कुल ठीक। नहीं, हमें याद ही नहीं रहा कि हम दूसरे को ही नहीं धोखा दे रहे हैं धीरे धीरे अपने को भी धोखा दिये जा रहे हैं। मैं बिल्कुल ठीक हूं। एक तो तकलीफ यह है कि हम दुख को देखते नहीं और जब दुख आता है तो हम भविष्य के सुखों की कल्पना में उस दुःख को भुला देते हैं। अगर पीड़ा आती है तो हम कहते हैं कि कल तक ठीक हो जायेगा। कल फिर पीड़ा आती है हम कल फिर कहते हैं सब ठीक हो जायेगा। हम रोज भविष्य पर टाल देते हैं। और आदमी रोज रोज पीड़ा उठा रहा है कि आखिर में मौत आ जाती है और वो कल नहीं आता वो कभी नहीं आने वाला। अगर हम लौटकर देखें जैसे कई चालीस साल जिया, पचास साल जिया, तो पीछे झांकर देखें तो जिन्दगी एक सुनसान नजर आती है जहां कभी कोई सुख का झरना नहीं गिरा। लेकिन अगर आगे देखें तो भविष्य एकदम हरियाली नजर आता है। बगीचे ही बगीचे और फूल ही फूल। लेकिन बड़े मजे की बात है कि जो आपको बीस साल पहले आपको बीस साल पीछे, अभी बीस साल पहले का मरुस्थल दिखाई पड़ा। वो बीस साल पहले आपको बगिया दिखाई पड़ा था। और अब भी आप उसे बगिया मानकर चलते हैं और जब आप जिसे बगिया मानकर चलते हैं जब वो आता है तो मरुस्थल निकलता है तो आप चलते जाते हैं, और आप पाते हैं कि आप मौत के सिवाय और कहीं नहीं पहुंचते। सिर्फ मौत तक पहुंचते हैं। अजीब बात है जिसे जिन्दगी कहते हैं वो मौत तक पहुंचा देती है। नहीं वो जिन्दगी नहीं होगी जो मौत तक पहुंचाती है, वो जिन्दगी नहीं हो सकती। और जो दुःख हो, दुःख में ले जाती है वहां कुछ भूल हो गई। हम शायद जीवन को नहीं जान पा रहे हैं। परमात्मा वास्तविक जीवन का नाम है परम जीवन का नाम है। नींद से जागकर, सपनों की नींद से जागकर वास्तविक जीवन है उसके बीच कोई रास्ता नहीं। किन्तु रास्ता है कि अपने दुख के प्रति पीड़ित होते चले जायें। दुख से भागें न, पीड़ा से पूरी तरह थक जाने दें। दुख के कांटों को सुख के फूलों की

आशा से ढांके न। और आप अचानक पायेंगे कि पीड़ा उस जगह पहुंच जाती है जहां विस्फोट हो जाता है। पीड़ा की एक जरूरत है कि पीड़ा आपको इतने बीच ले जाय कि अन्ततः आप पायें कि अब जागने के सिवाय कोई उपाय नहीं। यही दुख का प्रयोजन भी है। दुःख के अतिरिक्त पीड़ा के अतिरिक्त कोई सत्य तक नहीं पहुंचा है न पहुंच सकता है। धन्यभागी हैं वो जो अपनी पीड़ा को पूरी सच्चाई से सत्य मान लेते हैं। और अभागी हैं वो जो अपने दुखों को झूठे सुखों से छिपाये चले जाते हैं। और छिपाना ही इस सीमा तक पहुंच जाता है कि हम दूसरों से ही नहीं अपने से भी छिपाये चले जाते हैं। धीरे-धीरे हम खुद ही भूल जाते हैं। हम ऐसा इन्तजाम कर लेते हैं कि घाव दिखाई ही न पड़े। ऊपर से वस्त्र दिखाई पड़ते हैं और उनको देखते देखते हम भूल जाते हैं कि भीतर घाव भी है। नहीं, वहां कोई वेद मार्ग नहीं ले जाता, बुद्ध मार्ग नहीं, ले जाता, कोई मार्ग नहीं ले जाता। बुद्ध और वेद के ऋषि भी दुख के मार्ग से वहीं पहुंचते हैं सभी वहां तक दुःख की पीड़ा को झेल कर पहुंचते हैं।

एक और उन्होंने बात पूछी है, उन्होंने पूछा है कि आप की श्रद्धा गीता और रामायण और महाभारत और उपनिषदों में है? मेरी श्रद्धा मुझ में है। आपकी श्रद्धा आप में होनी चाहिए। दूसरे पर श्रद्धा स्वयं पर अश्रद्धा है। जिसकी स्वयं पर श्रद्धा नहीं वही दूसरे पर श्रद्धा करता है। नही तो कभी कोई श्रद्धा दूसरे पर नहीं करता। धर्म का संबंध परश्रद्धा से नहीं, आत्मश्रद्धा से है। धर्म का संबंध इससे नहीं है आपको किससे श्रद्धा है। उपनिषद के ऋषियों से पूछें हम किससे श्रद्धा है उनकी? अपने में श्रद्धा है वो कहेंगे। तो हम पागल हैं हम उनमें श्रद्धा करें वो अपने में श्रद्धा करें। कृष्ण से पूछें कि आपकी श्रद्धा किसमें है? वो कहेंगे कि मेरी श्रद्धा मुझ में है तो हम पागल हैं? हम उनसे श्रद्धा करें, राम से पूछें जीसस से पूछें महावीर से पूछें कि श्रद्धा किसमें है? तो वो कहेंगे कि मेरी श्रद्धा मुझ में है तो हमें ही क्या हुआ हम ही क्यों किसी पर श्रद्धा करें। सच तो यह है कि वेद के ऋषि इसलिए ज्ञान को उपलब्ध हुए कि उन्होंने अपने पर भरोसा किया। जिनका अपने पर भरोसा नहीं है वो कहां जायेगा कहां पहुंचेगा उसका कोई भरोसा नहीं है। वो तो वहीं मर गया। दूसरे के पैरों से नहीं चला जा सकता, न ही दूसरे की आंखों से देखा जा सकता है। मेरी श्रद्धा आपकी आंखों में हो तो क्या होगा? मेरी श्रद्धा मेरी आंखों में हो तो मेरी आंखें देख सकती हैं और अगर आपकी आंखों में मेरी श्रद्धा है तो मैं कैसे देख सकूंगा? कृष्ण की आंखें बड़ी प्यारी रही होंगी। अब क्राईस्ट की आंखें बड़ी प्यारी हैं, जरूर होंगी। मेरे किस काम की हैं मेरे बिलकुल किसी काम की नहीं। मेरी आंखें हैं मेरे काम की। किसी की आंखें किसी के काम की नहीं। अच्छी हैं उनके काम आती हैं। धन्य हैं उनका भाग्य उनको आंखें मिली हैं। लेकिन मुझे जो मिली हैं मुझे उन्हें ही अच्छा बना लेना चाहिए। मुझे रास्ते में मेरी आँख से देखना पड़ेगा। श्रद्धा है आँख अगर दूसरे पर चली जाय तो आदमी अंधा हो जाता है और अगर अपने पर आ जाये तो द्वार खुल सकते हैं। मैं आत्मिक श्रद्धा के लिए कहता हूं। अपने पर श्रद्धा करना, जरूर उस जगह पर पहुंच जायेंगे जिस पर कृष्ण पहुंचे हैं, जिस पर उपनिषद के ऋषि पहुंचे हैं, जहां राम पहुंचे हैं। क्योंकि वो भी अपने पर श्रद्धा रखकर वहाँ पहुंचे हैं। लेकिन एक अजीब जाल चलता है डिसिप्लिन का, धोखे का एक अजीब जाल चलता है। वो कहते हैं अपने पर श्रद्धा मत करो फलाने पर श्रद्धा करो। क्या कसूर है मेरा? कि मैं फलाने पर श्रद्धा करूं मुझे मेरे भगवान ने पैदा किया है, मेरी अपनी आँखे दी हैं, मुझे मेरे पैर दिये है, मुझे आत्मा दी है, मुझे सब दे दिया है जो मेरे देने के लिए है बाकी कुछ नहीं छोड़ा है। और मैं अगर श्रद्धा करूं किसी उधार में श्रद्धा करूं? वो उधार भी बड़ी है कोई पाँच हजार साल पहले खतम हो चुकी हैं आंखे। कोई दस हजार साल पहले कब्र में जा चुका है। जिसमें मैं श्रद्धा करूं। कब्रों को पकड़ कर बैठे रहो छातियों से लगाकर। खुद भी निर्धन हो जाओगे जिन्दगी खो जायेगी उन्हीं के सामने। नहीं, जिन्दगी से श्रद्धा करो भगवान कोई थक नहीं गया है

कि राम को आँखें दी हैं और आप को न देगा और भगवान ने आपके साथ कोई ज्यादती नहीं की है कि उनको आत्मा दे दी और आपको बिना आत्मा के पैदा कर दिया। भगवान ने जितना किसी को भी दिया है उतना आपको भी दिया है। लेकिन उसका प्रकट तभी होगा जब अपने पर श्रद्धा करके उसकी खोज होगी। जो दूसरे की आँख का सहारा लेता है वो भटक जाता है। सब श्रद्धाएँ भटकाती हैं। सिवाय आत्मिक श्रद्धा के। इसलिए सब हमारे धर्म, जिनको हम धर्म कहते हैं दूसरे पर श्रद्धा सिखाते हैं। क्यों? कारण है कुछ। क्योंकि अगर पुरोहित कहे आप पर श्रद्धा करो तो पुरोहित की क्या जरूरत रह जाती है? पण्डित अगर कहे कि अपने पर श्रद्धा करो तो पण्डित की क्या जरूरत रह जायेगी? गुरू कहे कि अगर अपने पर श्रद्धा करो गुरू की क्या जरूरत? सारा धंधा चलता है यह बात पर कि फलाने पर श्रद्धा करो कि फलाने पर श्रद्धा करो। सिर्फ अपने पर श्रद्धा न करो, तब चलेगा। ऐसी भूल मत करना क्योंकि अगर किसी ने स्वयं पर श्रद्धा कर ली तो उसका भगवान से सीधा संबंध हो जाता है। बीच के दलालों की जरूरत नहीं रह जाती। लेकिन हमारे जो बीच के दलाल हैं वो पूछते हैं कि किस पर श्रद्धा? मेरी किसी पर श्रद्धा नहीं है मेरी अपने पर श्रद्धा है। मेरा कोई कसूर है? अपराध है? मैं अपने पर श्रद्धा करता हूं। नहीं, अपने पर श्रद्धा करना अपराध नहीं है अपने पर श्रद्धा करना ही धर्म की पहली सीढ़ी है। और जो अपने पर से श्रद्धा शुरू करेगा वो अन्त में परमात्मा से श्रद्धा पर पहुंच जायेगा। परमात्मा गहरे से गहरा मेरा ही प्रभाव है। जब मैं अपने पर श्रद्धा करूंगा तो अपने भीतर जाऊंगा और भीतर और भीतर और भीतर। और अन्ततः वहाँ पहुंच जाऊंगा जहाँ मैं मिट जायेगा और वही रह जायेगा। लेकिन जिसको दूसरे पर श्रद्धा थी वो भीतर कैसे जायेगा वो बाहर जायेगा जहाँ दूसरे पर श्रद्धा है। राम पर श्रद्धा करने वाला राम के पीछे जायेगा, कृष्ण पर श्रद्धा करने वाला कृष्ण के पीछे जायेगा, मोहम्मद से श्रद्धा करने वाला मुहम्मद के पीछे जायेगा। हम किसी के पीछे जाकर अपने भीतर कभी नहीं पहुंचते। अपने भीतर जाना होगा तो अपने ही पीछे जाना पड़ेगा। किसी के पीछे नहीं। नहीं, धर्म का मार्ग अंधे होने का मार्ग नहीं है धर्म का मार्ग आत्मिक स्मरण का मार्ग है। अपने ही भीतर उतरने का मार्ग है।

और अन्तिम बात उन्होंने पूछी है कि आप का धर्म आप का इष्ट, आपका पथ प्रदर्शक कौन है? क्या है? किस धर्म से आप प्रेरणा लेकर उपदेश करते हैं। मेरा कोई पथ प्रदर्शक नहीं है। मुझे अपनी आँख मिली है अपनी चेतना मिली है अपनी आत्मा मिली है। छोटी ही सही भटकता हूं रास्ता भूल जाता हूं लेकिन उसी से चलता हूं क्योंकि भटकूंगा तो सीखूंगा गिरूंगा तो उठूंगा। छोटा सा दिया है सूरज नहीं है, चार कदम पर उसकी रोशनी पड़ती है उसी को लेकर चलता हूं, जब चार कदम चल लेता हूं तब तक रोशनी चार कदम और आगे चली जाती है, तब फिर चार कदम चल लेता हूं और ध्यान रहे कि दिया ही हाथ में रखा जा सकता है सूरज को हाथ में रखने का कोई उपाय भी नहीं है। सूरज को हाथ में रखकर जल जायेगा। दिया ही रखा जा सकता है। हर आदमी को अपना अपना दिया मिला है। सवाल यह नहीं है कि हमारे पास दिया नहीं है सवाल यह है कि हम उसे उपयोग कर रहे हैं या नहीं। ऐसा नहीं है हम तो दूसरे के सूरज को देख रहे हैं और अंधे हो रहे हैं क्योंकि ऐसा ही होता है अगर आप सूरज को पाँच मिनट देखते हैं तो बाद में दिया नहीं दिखाई पड़ता। राम की तरफ देख रहे हैं। कृष्ण की तरफ देख रहे हैं। होगा उनके पास सूरज लेकिन उनकी तरफ देखने में खतरा यही है कि कहीं अपना दिया दिखाई न पड़ा तो मुश्किल हो जायेगी। नहीं कोई पथ प्रदर्शक नहीं और अगर है तो पथ प्रदर्शक तो परमात्मा ही है। बीच में किसी को लेने की जरूरत नहीं पड़ती। जो बना रहा है जो पैदा कर रहा है वो मार्ग भी दिखायेगा जो सांस दे रहा जो प्राण दे रहा है जो जीवन दे रहा है वो मार्ग भी बतायेगा। इस आधार से चलता हूं कि मेरा कोई पथ प्रदर्शक नहीं है। और

फिर मैं अपना बोझ किसी के ऊपर क्यों डालूं। राम और कृष्ण के कन्धों पर इतने लोग चढ़ गए हैं कि वो भी उतारना चाहते होंगे। घबरा गए होंगे जान निकली जा रही होगी। बहुत लोग चढ़े हुए हैं उनके ऊपर। अपने पैर मिले हैं अपनी बुद्धि मिली है अपनी प्रतिभा मिली है उसका उपयोग जरूरी है किसी के ऊपर सवारी गांठना ठीक नहीं। हम को तो ऐसे लगता है कि हम बड़ी कृपा कर रहे हैं राम के ऊपर। कोई कृपा नहीं कर रहा है, सवारी कर रहे हैं उनके ऊपर। छाती पर चढ़े हुए हैं उनकी। उनकी दया है कि वो उतार नहीं देते। या यह समझो कि उनको पता नहीं है तो आप चढ़े हुए हैं उनके कन्धों पर। नहीं अपने अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं। व्यक्ति स्वयं अपना मार्ग है। और जब यह कहते हैं कि परमात्मा सब के भीतर है तो मेरे परमात्मा को किसी दूसरे के परमात्मा से पथ प्रदर्शन लेने की जरूरत क्या है? मेरा परमात्मा कुछ कमजोर है? कुछ इम्पोटेंन्ट है? उनका परमात्मा कुछ ज्यादा बड़ा हैं और मेरा परमात्मा कुछ कमजोर है? परमात्मा में तो कोई थोड़ा सा भी फर्क नहीं है। मेरे भीतर भी वही है जो उनके भीतर है। हां फर्क इतना ही है कि वो अपने को पहचान लिए हैं और मैंने अपने को नहीं पहचाना। मैं भी पहचान लूं। उनके पहचानने से क्या मतलब होगा। और कितना चिल्लाओगे कि भगवान हैं राम, भगवान हैं कृष्ण, इस चिल्लाने से क्या होगा? जब तक यह पता न चलेगा कि हम भी भगवान हैं तब तक कुछ फर्क नहीं पड़ने का। बुद्ध कहा करते थे, एक आदमी था जो गाँव के बाहर बैठ कर सारे गाँव की गाय भैंसों को लौटते समय गिनता रहता था। इतनी गायें इतनी जैसे इतना यह इतना वह, फिर वह भिक्षु हो गया। तो बुद्ध ने उससे कहा कि देख मुझे पता चला है कि तुम्हारी एक पुरानी आदत है कि दूसरे की गाय भैंसों को गिनता है क्या तेरे पास भी कोई गाय भैंस थी। उसने कहा कि मेरे पास तो कोई गाय भैंस न थी। गाँव की आती जाती थीं तो उन्हीं को मैं गिनता रहता था। बुद्ध ने कहा कि मैं तुम्हें भिक्षु बनाता हूं एक शर्त पर कि दूसरे की गिनती अब बन्द करना पड़ेगी। अगर तुमने दूसरे की गिनती फिर से करी कि दूसरों की कितनी गायें – भैंसें हैं तो यहाँ से भाग जा। तो इधर तुम्हारा कोई काम नहीं दूसरे की गिनती से क्या होगा अपना कुछ गिनना पड़ेगा। और अपने पास कुछ भी नहीं है और हम बड़े महिमाशाली हैं उनका गुणगान कर रहे हैं और मंजीरा पीट रहे हैं। इससे सिर्फ स्कूल के बच्चों की पढ़ाई में बाधा पड़ेगी और कुछ भी नहीं होगा। और हारने के बाद हम कहेंगे कि परमात्मा तो वह एकदम रास्ता दिखायेगा कि दूसरे के बच्चों को फेल करवा दिया। तब वह रास्ता न रहा तब तो दूसरे लोगों की नींद हराम कर दी वह नींद हराम करने वाले समझ लेंगे कि वह बहुत बड़ा काम कर रहे हैं। एक अखंड काम कर रहे हैं। अगर मुल्क अच्छा होगा तो क्रिमिनल एक्ट लगेगा इन अखंड काम करने वालों पर। बिलकुल अपराध है आपको राम का नाम लेना है तो बिल्कुल चुपचाप ले जाओ इससे क्या मतलब कि आप को राम का नाम लेना है और दूसरे की नींद हराम करनी है। लेकिन वह समझ रहा है कि दूसरों का भी भला कर रहा है वह खुद भी लाभ ले रहे हैं और आपको भी लाभ दे रहे हैं। न उनको लाभ मिल रहा है और न आपको लाभ मिल रहा है। लाभ किसी राम के नाम के दोहराने से नहीं लाभ तो इस स्मरण से मिलेगा कि मैं भी राम हूं। इस स्मरण से। वह कोई दशरथ के बेटे के साथ राम हो जाना चुक नहीं गया है। कोई दशरथ के बेटे ने ठेका नहीं ले लिया है कि आखरी बार हो रहा है फिर कोई राम न होगा। हर बेटा जो रोज पैदा होता है राम होने का अधिकार लेकर पैदा होता है। लेकिन भीतर पहुंचियेगा तो पता चलेगा कि यह दशरथ के बेटे राम की बात नहीं है, यह जो भीतर में छिपा है उसकी बात है। लेकिन उस तक जाने के लिए किसी दूसरे के मार्ग दर्शन की कोई आवश्यकता नहीं। आँख भीतर ले जाती है मार्ग दर्शक बाहर ले जाता है। मार्ग दर्शक बाहर है। सब मार्ग दर्शकों से आँख बन्द कर लें सब से क्षमा मांग लेनी है कि आप कृपा करें और मुझे छोड़ दो मुझ पर। ताकि मैं अपने भीतर झांक सकूं।

उन्होंने पूछा है किस ग्रन्थ के आधार पर आप यह कहते हैं ? मैं क्यों किसी ग्रंथ के आधार पर कहूं ? किसी ग्रथ से मेरा कोई संबंध नहीं है। कृष्ण से कभी मेरा मिलना जुलना नहीं हुआ। राम से कभी मुलाकात नहीं हुई। जीसस से कभी भेंट नहीं हुई और अब मैं उनके आधार पर कैसे कुछ कहूं। मैं तो कोई बात अपने आधार पर कह सकता हूं। लेकिन मजे की बात यह है कि राम से नहीं पूछा कि किसके आधार पर कह रहे हैं ? जीसस से नहीं पूछा विथ विच अथारिटी ? तुम किस अथारिटी के आधार पर यह कह रहे हो ? लेकिन पूछा, नासमझ लोग हर युग में मौजूद हैं। जीसस से यहूदियों ने पूछा किस आधार पर कह रहे हो ? जीसस ने कहा कि अधिकार मेरा है। लेकिन अब ईसाई मुझसे पूछता है कि आप बाईबिल के आधार पर कह रहे हो या नहीं कह रहे हो ? बड़ा मजा है। इसलिये जीसस सूली पर लटका। उसने वो बात अपने अधिकार से कही और पादरी पुरोहितों ने उसको मानने से इंकार कर दिया। क्योंकि हम जिन्दा आदमी को नहीं मानते मुर्दा आदमी मानते हैं। मजा यह है कि सब किताबें जिन्दा आदमियों की किताबें हैं। मैं किसी का अधिकार तो नहीं तोड़ रहा हूं। यह मेरा अपना अधिकार है और अगर मेरा भी कोई अधिकार नहीं है बोलने का, तो दूसरे का भी सत्य कैसे हो सकता है। और मैं कैसे कहूं ? कि मैं कैसे जानूं कि राम का क्या अर्थ, मैं कैसे समझूं कि जीसस का क्या प्रयोजन है। कैसे कहूं कि मैं अपने भी अर्थ ले सकता हूं मैं अपने अर्थ समझ सकता हूं अपने अनुभव समझ सकता हूं। लेकिन किसी ने यह कोई ठेका ले रखा है किसी किताब ने। कि इस किताब से मेरी बात मेल खानी चाहिए और नहीं मेल खायेगी तो आपत्ति हो जायेगी। मुझे फूल दिखाई पड़ रहा है बगीचे में खिला हुआ। और मैं कहता हूं कि फूल खिला है बगीचे में, आप कहते हैं किस माली के अधिकार से कह रहे हैं ? क्योंकि मेरी आंखों को फूल दिखाई पड़ रहा है। आप कहते हैं कि वनस्पति शास्त्र पढ़ा है। किस वनस्पति शास्त्र में लिखा है कि फूल खिला है। मैं क्यूं देखूं वनस्पति शास्त्र। मेरी आंख कहती हैं कि फूल खिला है। मेरी नासों में सुगन्ध आ रही है। मेरे कानों में पक्षियों के गीत सुनाई पड़ रहे हैं। और मैं किस के अधिकार से कहूं कि क्या जब किताब में लिखा होगा तब फूल खिलेगा ? यह फूल खिलता है बिना किसी किताब के पूछे ही। यह बिना किसी के अधिकार के अपने अधिकार से खिल रहा है। जैसे हम अपने अधिकार से देख रहे हैं। पूछते हैं किस के आधार से देख रहे हैं ? मेरा कोई अधिकार नहीं ? कृष्ण से मेरा कोई संबंध नहीं। अपनी बात कह रहा हूं। जिसे ताकत से भी कह सकता हूं। दूसरे की बात कभी ताकत से नहीं कही जा सकती। दूसरे की बात में बड़ा डर लगा रहता है पता नहीं ठीक कह रहे हैं या नहीं कह रहे हैं। दूसरे की बात ऐसी है जैसे स्कूल के बच्चे नकल उतार रहे हैं दूसरे के पेपर से। डर तो लगा ही रहता है पता नहीं यह ठीक है या गलत। उतारिये नकल दूसरों से। बच्चों को तो हम चोर कहते हैं कि नकल उतारते हो। और यह जो समझदार सब चोरी कर रहे हैं। और उसको हम नकल नहीं कहते। सब नकल है दूसरे के अधिकार का सवाल ही नहीं। मुझे जो दिखाई पड़ता है मुझे कहने का हक है। मैं यह नहीं कहता कि मुझे जो दिखाई पड़ता है वो आपको भी देखना ही पड़ेगा। अगर ऐसा न कहूं तो हिंसा हो जायेगी। आपको नहीं दिखाई पड़ेगा तो आप अपने अधिकार से कह सकते हैं कि आप गलत कह रहे हैं। मुझे नहीं दिखाई पड़ता, बात खतम हो गई। इससे ज्यादा बात आगे चलाने की जरूरत नहीं। औरों को न दिखाई पड़ता हो मुझे दिखाई पड़ता हो, हो सकता है मैं भ्रम में हूं या हो सकता है कि आप भ्रम में हो और यह कौन तय करेगा कौन आदमी से हम तय करवा लें कि कौन ठीक देख रहा है और कौन गलत ?

अंतिम बात उन्होंने पूछी है कि यदि चाहें तो हम शास्त्रार्थ को चुनोती देते है। बड़े मजे की बात है ! बहुत मजे की बात है। इसमें दो तीन बातें समझने जैसी हैं। एक तो शास्त्रार्थ का मतलब क्या होता है ? शास्त्रार्थ का मतलब होता है कि शास्त्र

का अर्थ क्या है ? मैं किसी शास्त्र को मानता नहीं। इसलिए मुझसे किसी शास्त्रार्थ का उपाय नहीं । मैं किसी शास्त्र का अर्थ करूं क्या जब मैं अपना स्वयं का अर्थ कर रहा हूं । यह किसी शास्त्र से उपयोगी नहीं है । या फिर शास्त्रार्थ का मतलब यह हो सकता है या फिर विवाद हो । लेकिन कहीं कभी विवाद से सत्य मिला है । विवाद से कभी सत्य खोजा गया है ? अगर विवाद से सत्य खोजा जा सकता तो बड़ी आसान बात थी । विवाद से कभी सत्य नहीं खोजा गया न कभी खोजा जायेगा । सत्य खोजा जाता है साधना से, विवाद से नहीं । वाद-विवाद का स य से क्या सबंध ? सत्य खोजा जाता है साधना से । तो फिर चुनौती मुझे मत दीजिए । चुनौती अपने को दीजिए कि साधना में उतर जायें और सत्य को खोजिए मुझे चुनौती देने से आपको क्या लाभ होगा । अपने को चुनौती दें । तो सत्य तक पहुंच भी सकते हैं । और चुनौती की भाषा ही अधार्मिक भाषा है । यह अधार्मिक चित्त का लक्षण है कि चुनौती देना । अधार्मिक चित लड़ने को आतुर रहता है । आदमी थोड़ा तो लट्ठ नहीं मार देता. फिर भी लट्ठ मारने की प्रवृत्ति भीतर रहती है । चुनौती की भाषा ही अधार्मिक और अहिंसक भाषा है, वायलेंट । मैं नहीं सोचता कि अगर दो व्यक्ति विवाद भी करें और कोई जीत जाय तो जीत जाने से यह सिद्ध नहीं होता जो जीत गया है वो सत्य है । जीत जाने से कुछ भी सिद्ध नहीं होता जो जीत गया है वो सत्य है । जीत जाने से इतना ही सिद्ध होता है कि वो आदमी जीतने के ढंग और मैथड और टेक्निक समझता है । सत्य होने का जीत से कोई संबंध नहीं । और यह भी हो सकता है कि जो हार गया वो इसलिए हार गया हो कि आपको हार जाने का भी दु-ख न देना चाहता हो । नीत्से ने मरने से पहले कहा है, नीत्से ने कहा है कि जब भी मुझे हराने आया है तो मैं एकदम से हार गया कि उसे हराने की तकलीफ न उठानी पड़े । मैं एकदम हार ही गया और उससे बोला कि लो मैं हार ही गया अब क्या इरादा है ? तो उसने यहां तक लिख कर दे दिया कि कोई हराने आया है तो हरा गया । कभी ऐसा होता है कि छोटे बच्चे अपने बाप से कुश्ती लड़ते हैं बाप जल्दी से गिर जाता है और बेटे को छाती पर बैठा लेता है और बेटा खुश हो जाता है और वो कहता है कि वो मारा चित्त कर दिया न ! छोटे बच्चों की बातें जब धार्मिक लोग करते हैं तो बड़ी मूर्खता मानी जाती है बिल्कुल छोटे बच्चों की बातें करते हैं । यह चुनौती कोई हारने जीतने का मामला है ? क्या जिन्दगी में, इस सत्य धर्म और परमात्मा की दुनियाँ में क्या कुश्ती लड़नी पड़ेगी ? कोई दंगल बनाना है । लेकिन हमारे पास नासमझी की कमी नहीं । सत्य को खोजना हो तो साधना करनी पड़ती है चुनौती नहीं देनी पड़ती । और फिर मैं तो बहुत निराधर्मी हूं । मैं यह कहता नहीं हूं जो मैं कहता हूं उसे आप सत्य मान लें इसलिए मुझसे विवाद का कोई उपाय नहीं है । विवाद का उपाय तो उस आदमी से है जो कहता है कि जो मैं कह रहा हूं वो सत्य है तो फिर विवाद का उपाय है जब आपको ऐसा सत्य नहीं मालूम पड़ रहा तो फिर विवाद करना पड़ेगा मैं तो सिर्फ निवेदन कर रहा हूं कि ऐसा मुझे दिखाई पड़ रहा है ।

इससे ज्यादा कुछ कह नहीं रहा हूं किसी से । हो सकता है कि आपको ऐसा दिखाई न पड़े आप बिलकुल स्वतंत्र हैं । कि आपको ऐसा दिखाई नहीं पड़ता है बात खतम हो गई । मुझसे कोई लेनदेन नहीं है लेकिन हमारा जो पुराना सोचने का ढंग और खयाल है वो ऐसा ही है । हजारों साल से हम विवाद कर रहे हैं सत्य के लिए । हम सोचते हैं विवाद से वो मिल जायेगा । मुकदमे लड़ रहे हैं सत्य के लिए बाजियाँ हार रहे हैं और जीत रहे हैं सत्य के लिए । नहीं, हजारों साल के विवाद से आदमी को कौन सा सत्य मिल गया । लेकिन पण्डित और कुछ नहीं कर सकता । और पण्डित का परमात्मा से कभी दूर का संबंध नहीं होता । शब्द शास्त्र और सिद्धांत यही सब कुछ है उसके लिए । परमात्मा तो उनको मिलता है, जो विनम्र भाव से सब शास्त्र सिद्धांत और द्वार को छोड़कर उसके द्वार पर जाते हैं । उन्हीं को वह उपलब्ध होता है । लेकिन कुछ लोग विवाद से पाना चाहते हैं उनको मालूम हो

परमात्मा यहां है तो वह उससे भी विवाद करें । उससे पूछे कि तुम किस अधिकार से बोल रहे हो कौन सा शास्त्र है ? हमारी किताब मानते हो कि नहीं मानते ? कौन सा धर्म मानते हो हिन्दू या मुसलमान? भगवान भी मुसीबत में पड़ जाता है जब वहां पण्डित पहुंच जाते हैं लेकिन कभी पण्डित वहां पहुंचा नहीं इसलिए भगवान को कोई मुसीबत नहीं । नहीं मुझे किसी से विवाद नहीं है मुझे किसी की चुनौती स्वीकार नहीं करनी है मैं तो बिलकुल हारा हुआ आदमी हूं । आपके हराने से पहले ही मैं हारा हुआ आदमी हूं आप हराने का कष्ट ही न करें मेरे जैसे आदमी को जीतना बहुत कठिन है । क्योंकि जो पहले से ही हारा हुआ है उसको आप हरायेंगे कैसे । लेकिन जो आकांक्षा रखता है उसे तो हराया भी जा सकता है । लेकिन जो जीतने क आकांक्षा न रखता हो उसको हरायियेगा ? अन्त में नीत्से के दो तीन वचन दुहराता हूं जो इस अर्थ में बहुत कीमती हैं । नीत्से ने कहा कि मुझे कभी कोई हरा नहीं सका क्योंकि मैं सदा से ही हारा हुआ था । मुझे कहीं किसी भवन से बाहर नहीं निकाला गया क्योंकि जहां लोग जूते उतारते मैं वहीं बैठता । मेरे पास मौत जायेगी तो मुझे मार न सकेगी क्योंकि मैं अपने को पहले से ही मरा हुआ समझता था । चोर मेरे घर में घुसे मुझे लूट न सके क्योंकि मेरे पास कुछ भी न था । कुछ चुनौती और विवाद की बातें किसी और दरवाजे पर होंगी मेरे द्वार पर नहीं । मुझे किन्हीं का एक तार आया है कहते हैं कि लिखित जवाब दें कैसे पागल लोग हैं तार दे रहे हैं लिखित जवाब दो हमारे प्रश्नों का । एकदम पागलपन से भरी हुई बातें हैं और सारा मुल्क ऐसे पागलों से परेशान हुआ रहता है । अभी इंदौर से मुझे किसी ने लिखा ऐसी कोई सनातन धर्म सभा थी वह भी उन्होंने लिखा है कि हम चुनौती भेजते हैं आप हमसे विवाद करनें आयें ! तो मैंने उनको लिख दिया कि मैं हारा हुआ हूं, आऊंगा जरूर लेकिन हारने के लिए लड़ने के लिए नहीं । उन्होंने अखबारों में खबर निकाल दी कि वह हार गए हैं और मुझे बहुत आनन्द हुआ । उन विचारों को इतनी खुशी हुई यह भी क्या कम पुण्य है । कुछ पुण्य अपने पल्ले भी बंधा । मनुष्य का मन लड़ने की प्रवृत्ति से मुक्त नहीं हुए बिना वह उसे जानने की दुनियां में प्रवेश नहीं पा सकते । लड़ाई लड़के थोड़े ही परमात्मा जाना जा सकता है । परमात्मा को जानना हो तो समर्पण चाहिए, हार चाहिए, मिट जाना चाहिए । लेकिन वह जो सब भांति मिट जाते हैं वह उसे पाने के अधिकारी हो जाते हैं । यद्यपि जैसे कोई बूंद अपने को सागर में खो देती है तो सागर हो जाती है ऐसे ही जब कोई व्यक्ति अपने सारे अहंकार अपने लड़ने के भाव को छोड़ देता है तो उस परमात्मा के समीप हो जाता है, जिनकी मिटने की तैयारी है वह सत्य को पा सकेंगे जिनकी होने की तैयारी है वह असत्य में ही जी सकते हैं । जिनकी मिटने की तैयारी है उनका सपना टूट जायेगा । जो होने के लिए जिद्द करके बैठे हैं उनका सपना लम्बा हो जायेगा और वह सपना जन्मों २ तक लम्बा होता चला जायेगा । सपना की बड़ी संभावना है वह कितना भी लम्बा हो । तो इन तीन दिनों में यह थोड़ी सी बातें आपको कहीं, आपने बड़ी कृपा की कि बातें सुनीं और बड़ी कृपा होगी कि मेरी बातों को मानना मत, सोचना । शायद कोई बात ठीक हो, शायद कोई बात ठीक न हो जो ठीक न हो उसे एकदम रद्दी की तरह बाहर फेंक देना और जो ठीक लगे उसे भी तत्पर न मान लेना जब तक प्रयोग करके उसे जांच ना लें । अगर प्रयोग से वह ठीक हो जाये तो वह आपकी हो जायेगी उससे मेरा कोई संबंध न रह जायेगा । जिस सत्य को हम प्रयोग करके जांच लेते हैं वह हमारा हो जाता है वह किसी का नहीं रह जाता और वही सत्य मुक्त करता है । मेरी बातों को इतनी शान्ति और प्रेम से सुना उससे बहुत अनुग्रहीत हूं अंत में आप सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूं । मेरे प्रणाम स्वीकार करें ।

***

(पूज्य आचार्य श्री का ३१ जनवरी १९७० को अमृतसर में हुआ एक प्रवचन)

अमृतसर में आचार्य श्री की तूफानी क्रांति

(अमृतसर रिपोर्ट)

प्रस्तुतकर्त्ता : श्री भीकमचन्द, जबलपुर

* धर्म के ठेकेदार तिलमिला उठे ।
* मसीहा को चुनौती, पोस्टर तथा पर्चेबाजी ।
* चुनौती देने वाले मंच छोड़ भागे ।
* गुंडागर्दी, शोरगुल, लाइट तथा माइक डिस्कनेक्ट ।
* बेहिसाब भीड़ और आचार्य रजनीश जिन्दाबाद ।
* स्वर्ण मंदिर में आचार्य रजनीश का बेमिसाल स्वागत

बम्बई, नारगोल, नवसारी तथा सूरत के अत्यन्त व्यस्त कार्यक्रमों के बाद ही दो से पाँच जून तक अमृतसर में आचार्य श्री रजनीश जी के प्रवचन आयोजित थे। अमृतसर की जनता ने आचार्य श्री को इसके पूर्व अनेक बार सुना था, लेकिन उनके वहाँ जाने से धर्म के ठेकेदारों का, जो आर्य समाज तथा सनातन धर्म के नाम पर रोजी रोटी चलाने में अग्रणी हैं, जनता पर प्रभाव कम हो गया। दीपक का प्रभाव तभी तक है जब तक सूर्य उसके समक्ष नहीं। लेकिन सूर्य के आते ही वह हीन एवं निश्प्रभ हो जाता है।

धर्म के ठेकेदार तिलमिला उठे :

अमृतसर में बड़े धर्मात्मा लोग हैं वे धर्म की बड़ी फिकर करते हैं । उनके धर्म पर विचार नहीं हो सकता है। उनके इस अद्वितीय धर्म पर यदि कोई विचार करेगा तो उसे दयानन्द जी की तरह मार डाला जायेगा फिर बाद में उनके नाम पर पथ चलाकर अपनी रोटी सेंकी जावेगी।

धर्म के इन महारक्षकों को आचार्य रजनीश से बड़ी घबराहट है, बड़ा खतरा है पता नहीं क्यों ? शायद आचार्य श्री को महा—समझते हों, इस बार इन रक्षकों को आचार्य श्री जी के पहुंचने की पहले से खबर थी। इसलिये उन्होंने अपने धर्म की रक्षा हेतु बहुत योजनायें तैयार की थीं। बड़े बड़े किले तैयार किये थे। और चौकसी करने के लिए बड़े बड़े योद्धा एकत्रित किये थे। उन्होंने (आर्य समाजी तथा सनातन धर्म सभा) आचार्य जी के विरुद्ध परचे प्रकाशित करवाये और बड़े बड़े पोस्टर लगाकर शास्त्रार्थ की खुली चुनौती दी। गली गली, कूंचों कूंचों में यह भी प्रयास किया कि कोई आचार्य जी को न सुनें। शायद वे समझते थे कि वे धर्म की रक्षा या सेवा कर रहे हैं।

रजनीश जी को चुनौती स्वीकार है :

शास्त्रार्थ की चुनौती देने के लिये इन धर्मात्माओं ने परचे, पोस्टर्स जैसे सस्ते प्रचार के साधन अपना कर

"जन यश" लूटने की चेष्टा की। लेकिन क्या होता है? गीदड़ जाल में फँस ही गये थे। आचार्य श्री रजनीश ने अमृतसर पहुंचते ही चुनौती स्वीकार कर ली। सयोजकों ने भी बड़ी सूझबूझ से काम लिया उन्होंने चुनौती स्वीकार कर समाचार सारे शहर में स्पीकरों से प्रचारित भी करवा दिया।

आचार्य जी ने चुनौती देने वालों को मंच पर सादर आमंत्रित ही न किया बल्कि विरोधी लोगों से अपना अध्यक्ष बना लेने को भी स्वीकृति प्रदान की।

पब्लिक मीटिंग में वादविवाद :

अमृतसर की चुनौती भरी इस प्रथम सभा में ही करीब १० हजार जनता थी। जनता के सामने था मंच और मंच पर थे दो खेमे। एक था आचार्य श्री रजनीश का तथा दूसरा था सनातन धर्म एवं आर्य समाजियों के प्रतिनिधि स्वामी सत्यप्रिय जी ब्रम्हचारी का। दानों के ही बीच थी अध्यक्ष जी की कुर्सी।

प्रश्नों का पुलिंदा :

स्वामी सत्यप्रिय जी निश्चित ही धर्म के महा-रक्षक थे। उन्होंने बड़ी लगन और श्रम से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न तैयार किये थे। उन्होंने सभा में पहुंचते ही प्रश्नों का पुलिंदा आचार्य श्री को दिया। ईश्वर की बात तो जाने दीजिये प्रश्नों की भाषा भी किसी तानाशाह से कम न थी।

लाजवाब करने वाले तर्क और बेमिशाल उत्तर :

आचार्य जी ने प्रश्नों के उत्तर देना शुरू किया प्रश्न और उत्तर इस प्रकार हैं :—

प्रश्न :—"वेद ईश्वरीय ज्ञान है" ऐसा आप स्वीकार करते हैं या नहीं ?

उत्तर :—आचार्य श्री ने सदैव की भांति निरुत्तर कर देने वाले तर्कों का प्रस्तुत करते हुये कहा "सभी ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान है इसलिये वेद मात्र को विशेष रूप से ईश्वरीय ज्ञान कहना उचित नहीं। कुरान, बाइबिल, ग्रंथ, वेद तथा अवेस्ता आदि द्वारा कथित ज्ञान को भी ईश्वरीय ज्ञान कहा जा सकता है"।

प्रश्न :—'ईश्वर है या नहीं" केवल हाँ या न में उत्तर दें ?

उत्तर :—आचार्य जी ने कहा "ईश्वर है या नहीं," ये दोनों कथन गलत हैं। मेरे लिये तो जो है उसका ही दूसरा नाम ईश्वर है। ईश्वर अर्थात अस्तित्व। इसलिये ईश्वर है कहने में मात्र पुनरोक्ति ही होती है। और कुछ नहीं।

जनता उठ चली :—

आचार्य जी को केवल बीस मिनट बोलना था वे दोनों का उत्तर ही दे पाये थे कि समय पूरा हो गया। अब स्वामी सत्य प्रिय जी को बोलना था, उन्होंने ज्योंही अपना माईक सम्भाला और वे कुछ कहें कि इसके पूर्व ही जनता उठकर चली गई। बहुत कहा सुना समझाया लेकिन जाने वालों को कौन रोक सकता ? अब तो केवल सुनाने वाले थे और सुनने वाले जा चुके थे। स्वामी जी का सरस भाषण जनता ने पता नहीं क्यों नहीं सुना ? शायद उन्हें माथा पच्ची के अलावा कुछ संभावनायें न थीं।

शोरगुल, नारेबाजी, लाईट माईक डिस्कनेक्ट :—

दूसरे दिन मीटिंग समय पर प्रारम्भ हुई। जनता जैसे आज उमड़ पड़ी हो सबकी चर्चाओं के विषय थे आचार्य रजनीश। कुछ उन्हें नजदीक से देखना चाहते थे, कुछ दूर से ही उनके भाषण का आनंद लेना चाहते थे।

अभी तक रजनीश जी मंच की शूली पर अकेले ही थे। वे प्रतीक्षा कर रहे थे : अध्यक्ष जी तथा चुनौती

वालों के प्रतिनिधियों की, लेकिन बहुत देर की प्रतीक्षा के बाद भी कोई शूली पर न पहुंचा। शायद शूली से सभी पाखंडी और दंभी घबड़ाते हैं। शूली पर असत्य पल नहीं सकता असत्य वहाँ जलकर भस्म हो जाता है। मुझे लगा जैसे आज मसीहा के रूप में रजनीश अकेले ही शूली पर चढ़कर अपने सत्य की परीक्षा दे रहे हों।

विरोधी मंच से लापता :—

परीक्षा देने अग्नि में उतरने के पूर्व ही आँच से ही भयभीत होकर विरोध करने वाले, पर्चे निकालने वाले, चुनौती देने वाले अपने पोथा पुराण लेकर आज कहाँ चले गये थे ? कछ पता नहीं था, मंच पर दीपक के सामने जुगुनुओं को न देखकर जनता भी आज प्रसन्न थी।

नारेबाजी तथा उपद्रव :—

आज आचार्य जी ने कल के शेष प्रश्नों के उत्तर देना प्रारंभ किया। कुछ देर ही बोले थे कि पूर्व नियोजित षड़यत्र का भांडा फूट गया। कुछ गांदड़ इधर उधर से उठे और आवाजें करने लगे। जनता उनसे एकदम नाराज हो गई। जनता बहादुर एवं बुद्धिमान थी। उन्हें यह कायराना काम पसंद नहीं था। उसने समझाया बुझाया कहा कि कुछ दम हो तो मंच से भागो मत। मंच पर जाओ, तर्क करो, विवाद करो और जबाव दो। जवाब तर्क तो दूर रहा। उनका असली में इरादा तो था कि रजनीश की मीटिंग में गड़बड़ी करना, अतः स्पीकर तथा लाईट लाईन डिस्कनेक्ट कर दी। जनता ने भी साहस से सचाई का साथ दिया अतः कुछ ही देर में बवंडर शांत हो गया। अमृतसर के नाम पर कलंक लगाने वालों को सबका कोप भाजन होना पड़ा। सर्वत्र उनकी निंदा की गई और जब यह मालूम पड़ा कि यह निंदनीय कार्य करवाने के लिये आचार्य जी को चुनौती देने ऐसा समझा जाता है कि आर्यसमाजी और सनातनी कुछ गुडों को लेकर आये थे तब से इनका बचाखुचा प्रभाव भी जाता रहा। बात कुछ भी हो दयानंद जी के हत्यारों के इरादे खतरनाक हैं भविष्य में..... ....से सावधान।

पुलिस कमिश्नर द्वारा खेद प्रकट :

पुलिस कमिश्नर को ज्योंही घटना की सूचना मिली उन्होंने आचार्य जी के पास पहुंच कर खेद प्रकट किया। तथा दूसरे दिनों के लिये पुलिस की समुचित व्यवस्था कर दी। वे स्वयं भी उपस्थित थे। प्रबुद्ध वर्ग की एक मीटिंग में वे बोले भी और आचार्य श्री के विचारों को मूल्यवान बतलाया।

स्वर्ण मंदिर में भव्य स्वागत :—

घटना की चर्चा घर-घर पहुंच चुकी थी। अब जनता आचार्य श्री को देखने और सुनने के अवसर को खोना नहीं चाहती थी। अतः अन्तिम दिनों में सभा में बेहिसाब भीड़ बढ़ती गई। अन्तिम मीटिंग में करीब २५ से ३० हजार जनता उपस्थित थी। संत के अपमान की खबर सुनकर एक अन्य सन्त के प्यारों के दिल में दर्द हुआ। उन्होंने बेमिशाल एक भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया। वे आचार्य श्री को नानक जी के स्वर्ण मंदिर में ले गये। वहाँ दरबार कमेटी के पदाधिकारियों ने उनका स्वागत किया। स्व० नेहरू के पश्चात् यह दूसरा अवसर था जब दरबार कमेटी ने आचार्य जी के स्वागत का आयोजन किया। वे मंदिर में प्राचीन अस्त्र-शस्त्रों, बहुमूल्य एवं ऐतिहासिक वस्तुओं का अवलोकन करवाते रहे। अन्त में विदा लेते समय आचार्य जी को ग्रन्थसाहिब की प्रति भेंट की और स्वर्ण मंदिर में पुनः पधारने का आमन्त्रण दिया।

प्रेस कान्फ्रेंस :—

घटना का वर्णन हिन्दी उर्दू के समस्त अखबारों में प्रकाशित कर खेद प्रकट किया गया और निंदा की गई। दूसरे दिन पत्रकार वार्ता में पत्रकारों ने वैचारिक क्रांति की दिशा में सहयोग देने का आश्वासन दिया। प्रारम्भ में जब पत्रकारों ने पूछा कि आचार्य जी इस समय आपके नाम की भारी सरगर्मी चल रही है तो

मुस्कराते हुए आचार्य जी ने उत्तर दिया—हाँ सरगर्मी के लिए मैं ही जबाबदार हूं, चाहता हूं कि इस देश के प्रत्येक विचार पर पुनर्विचार हो जिससे बहुमूल्य विचारों पर जमी हुई गर्दिश दूर हो और मनुष्य को स्वस्थ एवं सुन्दर जीवन यापन का अवसर मिल सके।

फिर चुनौती :

अन्त में आते समय दोनों ही विरोधी समुदायों ने एक पर्चा प्रकाशित कर रजनीश जी से अपील की कि उन्हें फिर समय दिया जाय जिससे वे रजनीश जी के विचारों का खण्डन करने के लिए १५–२० विद्वानों को आमंत्रित कर सकें।

आचार्य श्री ने इस चुनौती को भी सहर्ष स्वीकार कर लिया है। इस बात की उन्होंने लिखित सूचना भी दे दी है। और अपेक्षा की है कि मुझे चुनौती स्वीकार है। कृपया आयोजन करें और मुझे आने के लिए सूचना दें।

यह पहिला अवसर नहीं था, जब आचार्य श्री की बैठक में गड़बड़ी करने की कोशिश की गई। इसके पूर्व भी अमृतसर में ही वेदान्त सम्मेलन हुआ था। उसमें स्व० श्री वेदान्त केशरी हरीगिरी जी ने चुनौती दी थी। दोनों ही विद्वानों ने अपने अपने पक्ष को सबल करने के लिये अपने तर्क प्रस्तुत किये थे और जनता को स्वविवेक से निर्णय लेने हेतु छोड़ दिया गया था। इसके बाद पटना हिन्दू विश्व धर्म सम्मेलन में श्री शंकराचार्यजी के कारण चार दिवसीय सम्मेलन लाखों रुपयों के खर्च के बाद भी ये प्रथम दिन ही शांत हो गया। इसी स्थल पर रजनीश जी के तीन दिन तक प्रवचन चलते रहे। बेहिसाब भीड़ एकत्रित होती रही। जिसमें बिहार के मुख्यमत्री, प्रमुख न्यायाधीश एवं प्रबुद्ध वर्ग के अन्य हजारों नरनारी सम्मिलित थे।

मत वैभिन्नता कहीं भी हो सकती है। भारतीय संस्कृति का इतिहास इस प्रकार के वाद–विवादों से भरा पड़ा है। महीनों वाद–विवाद हुआ करते थे लेकिन किसी भी मत वैभिन्नता के कारण हिंसक उपद्रव तोड़ फोड़ की घटनायें नहीं होती थीं।

अपेक्षायें :—

आचार्य श्री रजनीश जी को बुलाने वालों से भी कुछ अपेक्षायें हैं, वे विरोधियों के किसी भी आक्रमण के लिये सतर्क रहें। सभा में इमरजेन्सी लाईट तथा वेटरी माइक अवश्य रखें साथ ही पूरे प्रवचन टेप करने की व्यवस्था करें तो श्रेयस्कर होगा।

***

"जिन्दा आदमी हाथ की सब रेखायें गलत कर देता है।"

प्रश्नोत्तर वार्त्ता

अंतस् की रश्मियाँ

(अमृतसर में दिया गया आचार्य श्री का एक प्रवचन)

संकलन : श्री सरदारीलाल सहगल, अमृतसर

एक मित्र ने पूछा है। पूछा है कि उपनिषद में कहा है परमात्मा तत्व उसको प्राप्त होता है जिसके गले में वो परमात्मा तत्व स्वयं ही माला डाल दे। इसका क्या अर्थ हुआ ? इससे साधक की साधना निरुपयोगी नहीं हुई ?

यह सवाल बहुत महत्वपूर्ण है। इसे समझने में थोड़ी कठिनाई भी हो सकती है। पहली बात तो यह है कि साधक के बिना उपाय के वो नहीं मिलेगा और दूसरी बात तत्काल यह कि सिर्फ साधक के उपाय से वो नहीं पाया जा सकता। साधक के प्रयत्नों से भी नहीं मिलता है वो। और साधक न प्रयत्न करें तो भी नहीं मिलता है। साधक प्रयत्न करता है और प्रयत्न करके थक जाता है, हार जाता है, समाप्त हो जाता है और यह अहंकार भी प्रयत्न करते-करते छूट जाता है कि मैं पा लूंगा उसे। जिस क्षण प्रयत्न इस जगह पहुंचता है कि प्रयत्न भी व्यर्थ दिखाई पड़ता है और साधक का अहंकार भी चला जाता है कि मैं पा सकूंगा, उसी क्षण वो उपलब्ध हो जाता है। प्रयत्न की असफलता पर उसकी प्राप्ति है और इसलिए जब किसी को मिलता है वो तब उसे ऐसा ही लगता है कि उसकी कृपा, उसके प्रसाद से मिला है वो। क्योंकि मैं तो प्रयत्न कर-कर के हार गया और नहीं पा सका। लेकिन दूसरी बात भी गलत है उसके प्रभाव से नहीं मिलता। क्योंकि अगर उसकी कृपा से मिलता है तो उसका यह मतलब हुआ कि उसके द्वार पर भी किसी के लिए कृपा है और किसी के लिए कृपा नहीं। तब तो उसका यह अर्थ हुआ कि परमात्मा भी किसी के प्रति मोह रखता है और किसी के प्रति बड़ा विरक्त है। किसी को दे देता है और किसी को नहीं देता। नहीं उस द्वार पर ऐसा भेद संभव नहीं है। उसकी कृपा से मिलता है, इसका यह अर्थ नहीं है। उसका अर्थ यह नहीं है कि उसकी कृपा से मिलता है क्योंकि उसकी कृपा सभी को उपलब्ध है। उसकी कृपा में किसी के प्रति कोई भेद भाव नही है। और जब कोई साधक यह कहता है कि उसकी कृपा से मिलता है तो असल में वो यह कहता है कि जब मैं सब प्रयत्न कर चुका तब तो वो नहीं मिला और अब मुझे मिला है जब मैं कोई प्रयत्न नहीं करता। वो भी क्या कहे उसे ऐसा ही लगता है कि उसी की कृपा से मिला। जब मैं प्रयत्न करता रहा तब तो वो मिला नहीं। मेरी बात समझे आप ! साधक की कठिनाई है। उसके प्रयास से नहीं मिला है तो कैसे कहे मेरे प्रयास से मिला है। लेकिन मिल तो गया है। वो और क्या कहे ? वो कहता है कि उसकी कृपा से मिला है। और यह भी साधक की भ्रांति है उसकी कृपा तो सब के लिए बराबर है। लेकिन उसकी कृपा के लिए हमारे द्वार बंद हैं। और हमारे द्वार तब खुलते हैं जब हमारा अहंकार विलीन होता है, साधक का अहंकार सब से सूक्ष्म अहंकार है और साधना का अहंकार अन्तिम अहंकार है। धन का अहंकार छोड़ देना बहुत आसान है यश का अहंकार छोड़ देना भी बहुत कठिन नहीं। क्योंकि इस अहंकार में बड़े गहरे में यह बात छिपी हुई है कि मैं पा लूंगा। और मैं ही बाधा है। एक छोटी सी घटना समझा दूं।

बुद्ध ने छः वर्ष तक तपश्चर्या की। जो भी जिसने कहा उन्होंने किया। किसी ने कहा उपवास तो

उन्होंने उपवास किया और किसी ने कहा शीर्षासन तो उन्होंने शीर्षासन किया। किसी ने कहा नाम जपो तो उन्होंने नाम जपा जिसने जो कहा वो सब उन्होंने किया। छः वर्ष निरन्तर प्रयास करके कहीं पहुंचे नहीं वहीं थे जहाँ से यात्रा शुरू की थी। निरन्जना नदी में स्नान करने उतरे थे। देह दुर्बल हो गई थी लम्बे उपवास किये थे, नदी में तेज धार थी, इतनी शक्ति भी नहीं थी कि नदी के बाहर निकल आयें। तो एक वृक्ष की जड़ को पकड़कर किसी तरह रुके रहे, उस जड़ को पकड़ने से उनके मन में ख्याल आया कि कितना निर्बल हो गया हूं कि नदी भी पार नहीं होगी। जीवन को बड़ी नदी को कैसे पार कर सकूंगा ? और छः वर्ष हो गए सब कर चुका जो कर सकता था अब तो करने योग्य शक्ति भी नहीं बची है। अब क्या होगा ? और सब कर लिया है निष्ठापूर्वक। उसके कोई दर्शन नहीं होते। धन को छोड़ आये थे, यश को छोड़ आये, राज्य भी छोड़ आये थे। उस दिन निरंजना नदी के तट पर अन्तिम अहंकार भी व्यर्थ हो गया कि मेरे प्रयास से पार नहीं फिर वो किसी भांति बाहर निकले और पास के वृक्ष के नीचे आराम करने लगे। उस संध्या उन्होंने साधना भी छोड़ दी। कहना चाहिए कि साधना भी छूट गई यह भी छूट गया कि मैं पा लूंगा। छः साल की असफलता ने बता दिया कि यह नहीं हो सकता। उस रात उस संध्या बुद्ध के मन की कल्पना करना बड़ी कठिन है। उस रात उनका मन कुछ भी करने की हालत में न रहा क्योंकि धन की दौड़ नहीं थी यश की दौड़ नहीं थी और आज सत्य की दौड़ भी नहीं थीं। क्योंकि दौड़ से पा लूंगा यह बात ही समाप्त हो गई। उस रात वह परम निश्चिंत थे। कोई चिन्ता न थी धर्म की भी चिन्ता न थी। परमात्मा को भी पाने का ख्याल न था। कोई ख्याल न था कुछ पाने का ख्याल ही न था पैरों में ताकत न थी वे अत्यन्त असहाय, हारे हुए, सर्वहारा उस रात सो गये। वो पहली रात थी जिस रात वो पूरी तरह सोये। क्योंकि उस रात करने को कुछ भी न बचा था। सब व्यर्थ हो गया था सब मात्र व्यर्थ हो गया था, कर्त्ता मर गया था। सुबह पाँच बजे के करीब उनकी आंख खुली आखिरी तारा डूब रहा था। उन्होंने आंख खोल के उस आखिरी डूबते तारे को देखा। आज उनकी समझ से बाहर था कि क्या करूंगा ? सुबह उठ के क्या करूंगा ? क्योंकि करना सभी समाप्त हो चुका था धन की दौड़ पहले खतम हो चुकी था यश की दौड़ पहले खतम हो चुकी थी रात धर्म की दौड़ भी छूट चुकी थी अब मैं क्या करूंगा ? वे एक शून्य में थे। जहां करना भी नहीं सूझ रहा था। एकदम खाली थे। अचानक उन्हें लगा जिसे मैं खोज रहा था वो मुझे मिल गया वो भीतर से ऊपर आया है। उस शान्त शून्य में, जब झील की सारी लहरें ठहर चुकी थीं आखिरी लहर जो धर्म के लिए मचलती थी वो भी ठहर गई। उस क्षण में उन्होंने जाना जिसे मैं खोज रहा था वह तो मिल गया। जब लोग उनसे पूछते कैसे आपने पाया तो वो उनको कहते जब तक कैसे पाने का मैंने उपाय किया तब तक उसे पाया ही नहीं। जब मेरे सारे उपाय थक गए तो मैंने देखा जिसको मैं ढूंढ रहा था वो तो मेरे भीतर मौजूद है। असल में जिसे हम खोज रहे हैं वो तो हमारे भीतर मौजूद है। और खोजने में हम इतने व्यस्त हैं कि जो भीतर मौजूद है उसकी हमें खबर ही नहीं पाती। खोज भी खो जानी चाहिए। खोज भी मिट जानी चाहिए। तभी उसका पता चलेगा कि वो भीतर है, क्योंकि तब हम कहाँ जायेंगे ? खोजने चित्त कहीं भी चला जाता है कहीं भी न खोजेंगे वहीं वो अपने पर लौट आयेगा। कोई रास्ता न रह जायेगा उस क्षण में मिलेगा। उस क्षण में जब मिलेगा तो कैसे कहेंगे कि पा लिया। उपनिषद ठीक ही कहते हैं कि जब वही वरमाला पहना देता है कि जब वही माला डाल देता है वह तभी मिलता है। लेकिन उपनिषद गलत भी कहते हैं क्योंकि वह किसी के गले में माला न पहनाए ऐसी बात ही नहीं है। वो तो माला लिये सबही के गलों के सामने खड़ा है जब तक हम गले को दूर रखते हैं तब तक वो भी क्या करे। जब हम गला नीचे झुका लेते हैं तो वह माला मिल जाती है माला तो हम सबके गले के पास लिये परमात्मा खड़ा है। लेकिन गला झुकना भी तो चाहिए। झुकेगा कैसे ? साधक का नहीं झुकता। साधक बड़ा अकड़ा रहता है।

साधक बहुत अहंकारी होता है। बड़ा सात्विक बड़ा सुन्दर, बड़ा पवित्र, बड़ा पायिस्ट एगोइस्ट होता है। साधक जो पवित्र अहंकारी है तो जब अहंकार पवित्र हो तब भी क्या फर्क पड़ता है, अहंकार अहंकार है। पवित्र जहर का क्या मतलब होता है? कोई मतलब नहीं होता। पवित्र जहर का मतलब हुआ जो और भी कन्सनटरेटिव, और भी शुद्ध। अपवित्र जहर का मतलब कुछ अडलटरेशन भी है। पवित्र जहर का मतलब सिर्फ जहर ही जहर है और उसमें कुछ भी मिला हुआ नहीं है। पवित्र अहंकार भी शुद्ध जहर है उसमें कुछ मिला हुआ नहीं है। पापी के अहंकार में और भी चीजें मिली होती हैं। पुण्यात्मा का अहंकार और भी शुद्ध होता है। उसमें कुछ मिला हुआ नहीं होता। साधक नहीं पा सकता क्योंकि अहकार नहीं पा सकता। लेकिन साधक हुए बिना भी उसे कोई नहीं पा सकता। इसलिए नहीं पा सकता कि साधक हुए बिना पता कैसे चलेगा कि साधना बेकार है। कृष्णमूर्ति कहते हैं भाग्यशाली हूं मैं कि मैंने शास्त्र नहीं पढ़े। मैं कहता हू भाग्यशाली हूं मैं कि मैंने शास्त्र पढ़े और पढ़ के जाना कि शास्त्रों से नहीं पाया जा सकता। लेकिन जिसने शास्त्र नहीं पढ़े उसके मन में कहीं न कहीं शक बना रह जा सकता है। शास्त्रों को पढ़ने से ही जाना जा सकता है कि नहीं मिलेगा यहां, यहां नहीं मिल सकता है। साधना करके ही जाना जा सकता है कि बेकार गई, बेकार गई नहीं मिला, नहीं मिला। जो सब तरफ दौड़ लेता है सब तरफ खोज लेता है कोने कोने खोज लेता है और थक के बैठ जाता है कि नहीं मिला। नहीं मिलता है आखिरी क्षण आ जाता है हैल्पलैस हो जाता है असहाय हो जाता है बैठ जाता है तब हैरान होके पाता है कि आश्चर्य, जिसे मैं दौड़ कर खोजता था वो बैठ कर मिल गया। असल में वो बैठे बिना नहीं मिलता है। और खोजने वाला बैठ नहीं पाता है। वो दौड़ता रहता है वो दौड़ता रहता है बैठ जाये तो वो पाता है कि वह तो मेरे पास ही है। इसलिए अगर किसी ने ऐसा कहा हो कि उसने माला डाल दी उसकी कृपा से। उसका कुल मतलब इतना है कि मेरे प्रयास से नहीं मिला। लेकिन उसकी कृपा सब पर बराबर है। उसकी कृपा की वर्षा सब के ऊपर हो रही है। लेकिन जो खाली घड़े की तरह हैं वो भर जायेंगे। और जो भरे हुए हैं वो खाली रह जायेंगे। वर्षा होती ही रहेगी वो नहीं भर पायेगा। ध्यान रहे भगवान को दयावान और कृपालु कहना बहुत ही गलत है। क्योंकि दयावान हम उसे ही सिर्फ कह सकते हैं जो कभी कभी अदया भी दिखाए। और कृपालु उसे कहते हैं जो कभी कभी कृपा को छीन भी लेता हो। नहीं परमात्मा कृपालु नहीं है परमात्मा कृपा स्वरूप है। यानी अब अकृपा का वहां कोई उपाय नहीं है। हम कहते हैं कि परमात्मा सर्व-शक्तिशाली है। लेकिन कुछ मामलों में बिलकुल ही शक्तिशाली नहीं। जैसे अकृपा करना चाहे तो बिलकुल इम्पोटेंट (Impotent) है। नहीं कर सकता है। दुष्टता करना चाहे तो नहीं कर सकता है, वहां जाकर बिलकुल निर्वीर्य है कुछ भी नहीं कर सकता। स्वभाव है वह चारों तरफ खड़ा है हम कब गर्दन झुका देंगे।

सरमद के संबंध में मैंने सुना है। मुसलमानों की आयत है कि एक ही परमात्मा है, एक ही परमात्मा है यह उनका खास ख्याल है और दूसरा उसका हिस्सा है उसके सिवाय और कोई परमात्मा नहीं है। एक ही परमात्मा है उसके सिवाय दूसरा कोई परमात्मा नहीं। सरमद पहले हिस्से को छोड़ देता था। और यही कहता रहता था कि दूसरा कोई परमात्मा नहीं। दूसरा कोई परमात्मा नहीं। तो मुसलमान मौलवी और पण्डित दिक्कत में पड़ गए। पंडित धार्मिक आदमी से सदा दिक्कत में पड़ जाता है। पण्डित वो जो अधर्म की दुकानों के मालिक हैं। वो सदा कठिनाई में पड़ जाते हैं। वे बासे शब्दों के संग्राहक हैं। और जब ताजा शब्द पैदा होता है तो वह मुश्किल में पड़ जाते हैं क्योंकि तब उनकी भाषा शब्द एक दम बासा दिखावा पड़ता है। सरमद यही कहता फिरता है कि नहीं है कोई परमात्मा आधा हिस्सा छोड़ देता है। पहला हिस्सा छोड़ देता है कि एक ही है परमात्मा, नहीं है दूसरा कोई परमात्मा। वो पिछली बात कहता रहता है कि नहीं है कोई

परमात्मा। तो जाके लोगों ने कहा औरंगजेब से कि यह तो बहुत अधर्म की बातें कहे चले जाता है। तो बादशाह ने बुलाया सरमद को और पूछा कि क्या है तेरा कहना उसने कहा नहीं है कोई परमात्मा। औरंगजेब ने कहा यह तो नास्तिक की बात हुई सरमद ने कहा अभी तो मैं इतना ही जान पाया हूं कि नहीं है कोई परमात्मा जब तक मैं न जान लूं कि है परमात्मा तब तक मैं कैसे कहूं मैंने नहीं जाना मैं नहीं कहूंगा। जान लूंगा तो कहूंगा। जब नहीं जाना तो कैसे कहूं? झूठ कह दूं तो पीछे परमात्मा मुझसे पूछेगा कि तूने बिना जाने कहा कैसे? तो मैं उसको जबाब क्या दूंगा? औरंगजेब ने उसे सूली पर चढ़ाने की आज्ञा दे दी कि यह आदमी मार डालने योग्य है और उसकी गर्दन काट दी गई। और कहानी बहुत अद्भुत है अगर सच न हो तो भी अद्भुत है। अर्थपूर्ण है। जिस दिन उसकी गर्दन कट गई दिल्ली की मस्जिद में जहां उसको सूली चढ़ी उसका सर लटकने लगा तो कहते हैं कि उसके सिर से आवाज निकली कि एक ही है परमात्मा उसके सिवाय कोई परमात्मा नहीं। भीड़ थी, लाखों लोग थे, तो उन्होंने कहा पागल थोड़ी देर पहले कह देते। अब गर्दन कट चुकने के बाद कहने से फायदा क्या? तो सरमद ने कहा कि गर्दन कटे बिना कैसे पता चलता? गर्दन कटी तो पता चला। जब मैं मिटा तो पता चला कि है वही उसके सिवाय कोई नहीं। बिना गर्दन कटे पता नहीं चल सकता। लोग कहने लगे पागल, थोड़ी देर पहले कह देते तो बच जाते। सरमद ने कहा—बच जाते तो कभी कह भी न पाते। खोना पड़ेगा अन्ततः खोना पड़ेगा इतना खोना पड़ेगा कि मेरे पास मेरे जैसा कहना भी कुछ न रह जाय। यह भी मैं प्रयास कर रहा हूं, साधना कर रहा हूं। समाधि कर रहा हूं योग कर रहा हूं इससे भी मैं मजबूत हो रहा हूं। यह भी कहने को बच न रहे। जिस दिन सब मेरा मैं कट जाता है कटेगा कैसे? असफलता से कटता है। सब तरफ हार जाने से कटता है। सब तरफ प्रयास की व्यर्थता से कटता है। साधना का एक ही मूल्य है। अन्ततः पता चलता है कि इससे भी नहीं मिलता है। और जब कुछ भी द्वार दरवाजा नहीं रह जाता तो उसके मिलने का कोई मार्ग ही नहीं रह जाता। तो आवाक् सा रह जाता है व्यक्ति और पाता है कि अब कुछ भी करने को शेष नहीं है, तत्क्षण वो मिल जाता है। वो मिला ही हुआ है। करने वाले को दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि करने वाला चित्त भागता रहता है। करने वाला चित्त ऐसा है जैसे कि एक फोटोग्राफर हो। और अपने कैमरे को लेकर मीलों की रफ्तार से दौड़ रहा हो। और जब बाद में अपने कमरे को खोले तो कोई तस्वीर न मिले। क्योंकि उसकी रफ्तार इतनी तेज थी कि जो भी उसके कैमरे से गुजरा वो पकड़ा नहीं गया। लेकिन रुक जाय तो तस्वीर बन जाय। रोका हुआ कैमरा तस्वीर पकड़ ले। भागता हुआ कैमरा कैसे पकड़ेगा? भागता हुआ कैमरा खाली रह जाता है। रुका हुआ कैमरा पकड़ लेता है। कहीं कैमरा हिल न जाय इसकी फिक्र भी रखनी पड़ती है। और हम पूरे समय भाग रहे हैं और हिल रहे हैं। तो वो जो मन का लैंस है वो जो मन का कैमरा है वो कुछ भी पकड़ नहीं पाता। परमात्मा चारों तरफ मौजूद है। और हम अपने मन को लेकर, कैमरे को लेकर भागे जा रहे हैं, दौड़ रहे हैं, चिल्ला रहे हैं, बैंड बाजा बजा रहे हैं, रामधुन कर रहे हैं, भजन कीर्तन कर रहे हैं सब कुछ कर रहे हैं भागे हुए। कहीं ठहर नहीं गए। ठहर जाएं तो उसकी तस्वीर अभी पकड़ जाय। लेकिन स्वभावतः जब भी दौड़ कर उसकी तस्वीर न पा सकेंगे और ठहर कर उसकी तस्वीर पकड़ लेंगे। तो शायद फोटोग्राफर को भी लगे कि उसकी कृपा से पकड़ पाये हम। तो बहुत दौड़े न मिला वो। अब जब हम खड़े हो गए तो उसकी तस्वीर बनी तो इसका मतलब साफ है कि हमारे प्रयास से नहीं बनी। उसकी कृपा से बनी। क्योंकि वो सदा कृपालु है द्वार पर खड़ा है आप कभी मिलते ही नहीं आप कभी घर पर होते ही नहीं। वो आये भी खोजने तो आप घर पर कभी होते ही नहीं हैं। आप कहीं और ही होते हैं। और यह जो बात है उपनिषद में सही भी और गलत भी। यह भी आप से कह दूं कि धर्म के सभी सूत्र ऐसे हैं कि किसी अर्थ में सही हैं किसी अर्थ में गलत भी। और इसलिए सब सूत्रों का खण्डन भी किया जा सकता

है सभी सूत्रों का समर्थन भी किया जा सकता है। असल में धर्म इतना रहस्यपूर्ण है कि उसमें सब विरोध समा जाते हैं तो ऐसा भी हम कह सकते हैं कि साधक को अपने प्रयास से ही मिलता है। कोई परमात्मा की कृपा नहीं। क्योंकि अगर प्रयास के थक जाने से ही मिलता है तो वो भी साधक के किए हुए प्रयास का अन्तिम फल है, थक जाना। जैन हैं, बौद्ध हैं वो ऐसा ही मानते हैं, कि उन्हीं के प्रयास से मिलता है चाहे थक के मिलता है थकान भी तो अपनी ही है। वो भी गलत नहीं कहते। उपनिषद हैं, जीसस के मानने वाले हैं ईसाई हैं मुसलमान हैं सब मानते हैं कि उसकी कृपा से मिलता है। वो भी गलत नहीं कहते क्योंकि जब हम थक जाते हैं तब वो मिलता है हालांकि तीनों सही कहते हैं तीनों गलत कहते हैं। क्योंकि बात ऐसा है कि वो दोनों तरह से हो सकती है। इसलिए मैंने कहा कि इसे ठीक से समझ लेना जरूरी है। सार में अन्तिम बात इस सबंध में वह कह दूं प्रयास जरूर करें। ताकि जल्दी थक जायें और सब प्रयास व्यर्थ हो जायें। खूब दौड़ लें ताकि थकान आ जाये, और गिरना हो जाये। आधी दौड़ में मत रुक जाना किसी की बात सुन कर। यह ठीक है कि प्रयास से नहीं मिलेगा वही माला डालेगा। तो फिर हम क्यों दौड़ें रुक जायें। लेकिन जो आधा दौड़ के रुका है उसका मन दौड़ता ही रहेगा। वो रुक नहीं सकता है। नहीं, दौड़ के गिरना ही जरूरी है। थकना ही जरूरी है, चित्त से दौड़ का खो जाना ही जरूरी है। इसलिए मैं कहता हूं शास्त्र पढ़ना ताकि पढकर पता चल जाये कि शास्त्र व्यर्थ हैं और साधना करना ताकि पता चल जाये कि साधना बेकार है। खोजना ताकि खोजने से पता चल जाये कि खोजने से नहीं मिलता। जिस दिन यह सब हो जायेगा उस दिन अचानक पायेंगे जिसे खोजने कहीं और गए थे वो सदा आप के द्वार पर बैठा प्रतीक्षा कर रहा है। वो देखता था कि कब लौट आओगे माला गले में डाल दें माला सदा तैयार है गला झुकने को तैयार नहीं। झुकता गला वही है जो कटने को तैयार हो। मिटने को तैयार हो, इसलिए मैंने कहा था कि समाधि एक अर्थों में मृत्यु है। अपने मैं का मर जाना।

एक दूसरे मित्र ने पूछा है कि जब समाधि में आप कहते हैं कि मैं अकेला हूं और ऐसा भाव करते हैं तो बहुत असंभव विचार आते हैं। लेकिन यदि साथ में ओम वा राम नाम का जप करने लगें तो अकेलेपन की भावना प्राप्त करने में सहायता मिलती है। इस संबंध में आपके क्या ख्याल हैं? ××× आपने अकेलेपन के भाव में राम नाम का जाप शुरू कर दिया तो आप अकेले कैसे रहे? राम को बुला लिया सहायता में अकेले न रहे। दो हो गए राम और आप, ओम का जाप करने लगे तो भी दो हो गए। दो में तो राहत मिल ही जाती है, हमारे मन की ही आदत ऐसी है। अभी थोड़ी देर पहिले फिल्म का गाना गुनगुना रहे थे तब भी दो थे, अब राम नाम जपने लगे हैं अब भी दो हैं। काम वही जारी है सिर्फ शब्द बदल गए। मन की आदत पुरानी ही जारी है। अभी सोच रहे थे किसी मित्र के संबंध में किसी परिजन के संबंध में अब उसके सबंध में न सोच के राम और ओम के संबंध में सोचने लगे। मन का काम जारी है। मन इसके लिए राजी हो जायेगा। कहेगा कि यह ठीक है क्योंकि इससे कुछ बदला नहीं है सिर्फ आबजेक्ट बदला। सिर्फ विषय वस्तु बदल गई, मन का काम पुराना ही जारी है। अब प्रेमी हैं वो अपनी प्रेयसी के नक्श का विचार कर रहा है और एक भक्त है वो अपने भगवान के नक्श का विचार कर रहा है दोनों में कोई भी फर्क नहीं, दोनों का मन एक ही काम कर रहा है। मन राजी है। नहीं, जब मैं कह रहा हूं अकेले का भाव नहीं। इसका मतलब यह है कि दूसरे के प्रवेश की जगह ही मत छोड़ो। तब मन मरेगा मन दूसरे को चाहता है, मन द्वैत को चाहता है। मन द्वैत में ही जिन्दा रहता है अगर द्वैत गया तो मन गया। वो मन कहता है किसी भी तरह का द्वैत पैदा कर लो। भगवान और भक्त का कर लो, मां बेटे का कर लो, प्रेमी और प्रेयसी का कर लो, मित्र और शत्रु का कर लो। द्वैत पैदा कर लो। फिर मन राजी है क्योंकि मन कहता है कि द्वैत मेरा जीवन है तो किसी तरह का द्वैत पैदा कर लो तो मन फिर गड़बड़ नहीं करता कहता है सब ठीक है। हम राजी हैं लेकिन अगर द्वैत पैदा ही मत करो और

कहो कि मैं अकेला ही राजी हूं। कोई है ही नहीं दूसरा न कोई राम, न कोई भगवान नहीं है कोई दूसरा, मैं अकेला हूं, निपट अकेला हूं, तब मन छटपटाने लगता है। जब जब वो अकेलेपन की छटपटाहट होती है तो मन दौड़ के फिर दूसरा ख्याल पैदा करता है। वो कहेगा कि अकेले कैसे हो सकता है। कुछ तो विचार करो कुछ तो सोचो कोई चित्र लाओ। नहीं, मन की यह छटपटाहट किस बात की खबर है कि मरने से बच रहा है और अपने बचने का उपाय कर रहा है। उसे कोई सहारा चाहिए, वो द्वैत के बिना नहीं जी सकता। आप तो जी सकते हैं, द्वैत के बिना आपका मन नहीं जी सकता। मन का अस्तित्व दो को चाहता है। दो के बिना मन को बिलकुल राहत नहीं मिल सकती। किसी भी तरह दो चाहिए। दो न हों तो मन मुश्किल में हो जाता है। जब मैं कहता हूं अकेले काभाव टोटली एलोन तो इसका मतलब यह है कि द्वैत की वृति को जाने दें। मन कहे कि मुझे द्वैत चाहिए तो उसे दें मत। और फिर हमने अच्छे द्वैत खोज लिए। हम कहते हैं कि चलो ठीक है फिल्म का गीत मत गाओ वो बुरी चीज है। और रामधुन करो। लेकिन वही एक बात है कोई फर्क नहीं है। जरा भी फर्क नहीं राम नाम कहो कि कुछ और कहो कोई फर्क नहीं है। वो जो मन है कहता है कि कुछ करते रहो। कुछ करते रहो उससे चलेगा, कुछ भी कहते रहो लेकिन रुको मत। दूसरे को पैदा कर लो कुछ भी दूसरा मौजूद रहे तो मन राजी है और समाधि में जाना हो तो दूसरे को हटाना जरूरी है। तब मन मिट जाय। मन की मृत्यु का सूत्र है कि द्वैत से अपने मन की वृत्ति को हटा लेना। दूसरे से छुटकारा पाने का, नहीं तो दूसरे के साथ रस कायम हो जाता है। कोई फर्क नहीं पड़ता है कोई भेद नहीं पड़ता है इसलिए जब मैं कहता हूं अकेलापन तो उसका मतलब है कि द्वैत नहीं। उसका अर्थ है दूसरा नहीं किसी तरह से दूसरे का सहारा नहीं लेना है। दिक्कत होगी कठिनाई होगी जब भी कोई चीज मरती है तो कठिनाई होती है मन पुराना है जन्मों जन्मों का है। शरीर तो बहुत नया है शरीर तो हर बार बदल जाता है। मन बहुत पुराना है लाखों हजारों करोड़ों वर्षों का है। मनुष्य जाति की जितनी उम्र है उतना पुराना मन है वह पुराना मन अपने बचने का पूरा इंतजाम करेगा। वो आखरी उपाय करेगा क्योंकि आखिरी उपाय बड़ी होशियारी का है। अगर आप नहीं मानते तो वो कहता है कि अच्छा हम तुम्हारी ही तरकीब से ही राजी हैं, तुम्हारी तरकीब से ही तुम राम नाम कहते हो तो राम नाम कहो। लेकिन कुछ कहो जरूर बोलते रहो दूसरे को बनाये रखो। मन भी बच जायेगा। वो दूसरे को बना लेता है, मन दूसरे के बिना नहीं जी सकता। और दूसरे के बिना तत्काल मर जाता है। मन की मृत्यु ही समाधि का द्वार है, इसलिये मन को छटपटाने देना कहना कि ठीक है कि छटपटाओ लेकिन मैं अकेला ही हूं और दूसरे का सहारा कभी न लूंगा। दूसरी मेरी कल्पना का सहारा है। मन की सबसे बड़ी ताकत तो यह है कि वो तत्काल आप जिस तरह का सहारा चाहें उस तरह का सहारा दे देता है। आप रात सपना देख रहे थे। अगर दिन में भूखे रहे हैं तो रात मन कहता है कि भोजन कर लो। सपना दिखा देता है भोजन का। कल्पित भोजन करा देता है, उससे बड़ा फायदा होता है मन को नींद नहीं टूटती। नींद बनी रहती है, सपना जो हैं वो नींद को बचाने का उपाय है, सेफ्टी नेचर है, अगर सपना न हो तो आप का सोना मुश्किल हो जाये। क्योंकि दिन में आपने जो जो छोड़ा है रात भर वो आपकी परेशान करेगा। मन कहता है कि जो करना है कर लो, कल्पना में ही पूरा कर लो। आप अलारमी घड़ी रख के सोये हैं कि सुबह चार बजे उठना है वो अलारम की घड़ी बज रही है और फिर मन कहता है कि मन्दिर की घंटी बज रही है पूजा शुरू हो रही है। वो अलारम से इंकार कर रहा है कि वो कह रहा कि मन्दिर की घंटी बज रही है! कहां का अलार्म है? और आप मजे में सपने में खो गए और वो घंटी बजके बंद हो गई। आप मजे से सो रहे हैं कि मन्दिर की घंटी से उठने का क्या संबंध? मन ने तरकीब ईजाद की, मन ने कहा नींद मत तोड़ो नींद को बचाओ वो अलार्म की घंटी का उसने मन्दिर के घड़ियाल में बदल दिया। मन्दिर का घंटा हो गया। मन पूरे समय ईजाद

कर रहा है नींद न टूट जाये रात सपना देख रहा है कि नींद न टूट जाय दिल में कल्पनाएँ दे रहा है कि नींद न टूट जाये। और जब आप कल्पनाएँ तोड़ना चाहते है तो वो नई कल्पनायें देता है। तो वो कहता है कि पति की कल्पना ठीक नहीं लगती तो कृष्ण की कल्पना पति के रूप में करो। मन कहता है कि नहीं अच्छा लगता आदमी का साथ, तो भगवान का साथ दो। कोई फिक्र नहीं, उनकी मूर्ति का साथ करो उसके साथ जियो, बड़ा अच्छा लगता है। लेकिन फर्क क्या है रात के सपनों जैसे ही मन दिन में सपने पैदा कर देता है। सपने नींद के बचाने के उपाय हैं दो तरह की नींद है एक तो वो जो रोज रात को लेते हैं एक तो वो है जिसमें हम जन्म से ही सोये हुए हैं। नींद अगर तोड़नी है तो मन के उपायों के प्रति हमें जाग्रत होना पड़ेगा, समझना पड़ेगा कि मन को भोजन नहीं देना है। मन द्वैत का भोजन माँगता है। इसलिए मित्र ने ठीक ही पूछा है कि ओम और राम का सहरा देंगे तो राहत मिलती है। राहत मिल ही जायेगी क्योंकि मन का काम पूरा हो गया। नहीं राहत देनी ही नहीं। राहत न देंगे मन तड़पेगा, तड़पेगा तड़पने दो। वो पुकार करेगा, चाहिए दूसरा, दूसरा लाओ, किसी भी रूप में लाओ लेकिन आप कहें कि मैं अकेला हूं बिल्कुल अकेला हूं और किसी को भी ले आऊँगा तो मैं अकेला ही रहूंगा। पत्नि को ले आया क्या अकेलापन मिटा ? अकेला तो मैं हूं ही। अकेला होना मेरा स्वभाव है। कहाँ से लाऊँ दूसरे को ? जब आप बहुत स्पष्ट रूप से तैयार हो जायेंगे कि अकेला होने की तैयारी है, मन थोड़ी देर चिल्लायेगा और चुप हो जायेगा। जिस दिन मन चुप होगा उस दिन जिस की प्रतीति होगी वो पर-- मात्मा है। जिस को आप राम नाम कह के कह रहे हैं वो नहीं। वो आपके शब्द हैं आपकी गाता के। इजादें हैं जिस दिन अद्वैत होगा उस दिन आप जानेंगे कि वो है और जिसको आप चिल्ला रहे थे उसका मूल्य कुछ भी नहीं। उसका मूल्य कुछ भी नहीं, लेकिन जिस दिन मन चला जायेगा और कुछ भी न बच जायेगा तो आप जानेंगे आप की आवाज नहीं होगी कि कोई द्वैत नहीं होगा, आपके मन की कोई इन्वेन्शन नहीं होगी। मन होगा ही नहीं। जिस दिन आप उसे जानेंगे वो कुछ और है। उसे कोई भी नाम दे दें मोक्ष कहें, समाधि कहें, निर्वाण कहें ओम कहें, ब्रम्ह कहें, उससे कुछ फर्क नहीं पड़ता जो भी कहें। उस जगत में सब शब्द समान अर्थ हैं क्योंकि वहां सभी शब्द से एक से अर्थ हैं। किसी शब्द की कोई गति नहीं। कोई भी अ, ब, स का नाम दिया तो चल जायेगा। उससे कोई अन्तर नहीं पड़ता लेकिन आप मन के धोखे में मत पड़ जायें आप मन के द्वारा ईजाद मत कर लेना। मन को राहत देने की कोशिश मत करें मन को थोड़ा तड़पने दें। मन को थोड़ा परेशान होने दें, जब वो परेशान होगा तड़पेगा, तभी ही मरता है। मन की मृत्यु ही समाधि है।

एक और मित्र ने पूछा है, कि समाधि में देवताओं का दर्शन होता है। ऐसा महान् संतों के जीवन में सुना है, पढ़ा है कि वो राम और कृष्ण का होता है मुहम्मद पैगम्बर का होता है, काली माँ का और अन्य देवताओं के दर्शन होते हैं। ऐसे दर्शन के सबंध में क्या ख्याल हैं ? ●●● यह सब दर्शन मन के सपने हैं। इसलिए जब तक किसी का दर्शन होता रहे कि हम समझेंगे कि मन मौजूद है। और अभी चक्कर के बाहर आप नहीं हो गये हैं। कोई भी दिखता रहे दर्शन से ही मुक्त हो जाना है तभी उसका पता चलेगा कि जिसको दर्शन हो रहा है वो दृष्टा है। सब भ्रम हैं बड़े सपने हैं। कृष्ण खड़े हों बाँसुरी बजाते, कैसा प्यारा सपना है लेकिन ध्यान रहे कि प्यारे सपने बुरे सपनों से भी बुरे सपने होते हैं। क्योंकि बुरे सपने बुरे होने की वजह से जल्दी टूट जाते हैं और प्यारे सपने प्यारे होने की वजह से मन होता है नहीं टूट जाये। मन कहता है कि बने ही रहें। रात देखा है कि सुखद सपना आता हो, मन कहता है कि बना ही रहे कोई जगा दे बीच में तो दुश्मन मालूम पड़ता है कि किसी तरह दिन का भिखमंगापन मिटा था, रात सम्राट हो गए थे नाहक उठा दिया हमको और बने रहने देते तो बुरा क्या था। सुखद सपनों को बचाने की प्रवृति होती है दुखद सपना तो जल्दी टूट

सकता है सुखद सपना जल्दी नहीं टूटता। यह सब सुखद सपने और आदमी के मन की यह ताकत है, बड़ी ताकत है आदमी के मन की, सपने पैदा करता है। ड्रीम क्रियेटिंग फोर्स (Dream Creating Force) सपने पैदा करने वाली शक्ति। वो स्वप्न किसी भी तरह से पैदा कर सकती है और अगर आप व्यवस्था से पैदा करें तो कैसे भी स्वप्न पैदा कर सकते हैं व्यवस्था हमने खोज ली, अगर आपका पेट भरा है तो आपकी स्वप्न पैदा करने की क्षमता कम हो जाती है और अगर आपका पेट खाली है तो वही क्षमता बढ़ जाती है। इसलिए जो लोग इस दर्शन के चक्कर में पड़ना चाहते हैं उनके लिए उपवास करना एक रामबाण व्यवस्था है। एक दिन उपवास कर लें तो सपने पैदा करने की क्षमता तीव्र हो जाती है। कभी आपको बुखार आया हो और खाना पीना बंद रखना पड़ा हो, तब पता होगा कि ऐसी-ऐसी चीजें दिखाई पड़ने लगता हैं कि जो कभी दिखाई नहीं पड़ती, कभी आप उड़ने लगते हैं कभी आप आसमान में चले जाते हैं कभी देवी देवता दिखाई देते हैं कभी भूत प्रेत भी दिखाई पड़ते हैं और यह सब होने लगता है लंघन में पड़े हुए बीमार आदमी को। यह सब क्यों दिखाई देने लगता है क्या कारण है। कारण यह है कि जैसे शरीर की शक्ति कम होती है मन की शक्ति ज्यादा हो जाती है। मन का शरीर पर काबू कम हो जाता है। मन बिल्कुल दौड़ने लगता है इसलिए दिन में आप कभी इतने सपने नहीं देख पाते जितने रात को देख पाते हैं। क्योंकि रात को शरीर थक के गिर जाता है। मन मुक्त हो जाता है कि जो चाहे देखे, सपना देखने का इंतजाम है सपने देखने की व्यवस्था है। उस व्यवस्था में उपवास बड़ा कारगर उपाय है। जिस को भी इस तरह के सपने देखना है, देवी देवता भूत-प्रेत, जो भी देखना हो उसके लिए लम्बे दिन भूखे रहने से बड़ा लाभ होगा। एकांत भी बड़ी उपयोगी चीज है। भीड़ में सपना देखना मुश्किल हो जाता है आसपास के लोगों की मौजूदगी बाधा डालती है। एकांत में सपने आसान हो जाते हैं। इसलिए जंगल में भाग जायें किसी गुफा में छुप जायें। वहां सपने आसान होते हैं, कभी आपको एकांत में रहने का मौका मिला हो तो पता होगा। अगर घर के सब लोग चले जायेंगे और घर गांव से बाहर हो तो पत्ता खड़कता है तो ऐसा लगता है कि आया कोई। और अब जो मन की सपने देखने की जो क्षमता है वो तीव्र हो गई है पत्ते के खड़कने में किसी के पैर की आवाज सुनाई देती है। सुबह आपने नहाकर के लंगोट खड़ा कर दिया है रात को दिखता है कि हाथ फैलाये खड़ा है कोई। वो आपने ही टांगा है लेकिन लगता है कि कोई हाथ फैलाये खड़ा हैं। दूसरे की मौजूदगी हमें सपने देखने में बाधा डालती है। क्योंकि दूसरा क्या कहेगा दूसरे की मौजूदगी हमारी बुद्धि को स्वस्थिर रखती है। इसलिए जिसको सपने देखने में काफी रस लेना है उनको भाग जाना चाहिए समाज से दूर। समाज से भाग जाने की प्रवृति सपने को देखने की सुविधा से पैदा हुई। इधर अमृतसर में देखना बहुत मुश्किल है सपना। चलें हिमालय की तरफ कहीं एकान्त में वहां सपना बहुत आसान हो जायेगा। भूखे हैं एकांत में चले जायें। सैक्स सप्रैशन भी सपना देखने की बड़ी अच्छी तरकीब है। अगर कोई व्यक्ति अपनी यौन प्रवृत्ति को जोर से दबा ले उसके सपनों की शक्ति ऐसी हो जाती है कि जैसे किसी स्प्रिंग को दबा दिया हो। वो स्प्रिंग चीजों को जोर से वापिस भेजता है। लेकिन जो लोग सैक्ससप्रेसिव होते हैं उन लोगों के सपने बढ़ जाते हैं जिन लोगों ने काम की वृत्ति को दबाया है वो तमाम रात सपनों से भर जाती है। बहुत पहले यह सामने आ गया था, अगर सपना देखना है ठीक से तो सैक्स को दबाओ और ध्यान रहे कि जिसने सैक्स को दबाया कि उसकी सपने देखने की क्षमता इतनी बढ़ जाती है कि उसका कोई हिसाब नहीं है। पागल खानों में जितने लोग बन्द हैं उनमें से सौ में से नब्बे काम की वृत्ति को दबाने की वजह से पागल हैं। पागल का मतलब क्या है? पागल का मतलब यह है कि वो इतने सपने देखने लगा कि आंख खोलकर भी सपने देखता है। अब आंख बन्द करने की जरूरत नहीं। आपको जब सपना देखना होता है तो आंख बन्द करनी पड़ती है। उसको आंख बन्द करने की जरूरत नहीं

आंख खोलकर के देखता है। और आपका सपना आंख खोलने से टूट जाता है और उसका सपना आंख खोलने से नहीं टूटता। और आप देखें कोई पागल किसी से बात कर रहा है लेकिन कोई है ही नहीं मौजूद और वो बात कर रहा है उसको आप पागल कहेंगे। लेकिन अगर एक भक्त भगवान से बातें कर रहा है तो उसके आप चरण छुएंगे। दोनों एक ही स्थिति में हैं। थोड़ा फर्क हो सकता है कि यह पागल खतरनाक हो सकता है जो किसी से बातें कर रहा है और भक्त भगवान से बातें कर रहा है यह खतरनाक नहीं हो सकता। बस इतना फर्क हो सकता है यानि सोशिली डेंजरस हो सकता है यह आदमी जो अभी किसी से बातें कर रहा था। हम इसे पागल खाने में दाखिल करेंगे और यह जो आदमी भगवान से बातें कर रहा है वह सामाजिक रूप से खतरनाक नहीं। वैसे इसे भी हमने तरकीब से एक तरह के पागल खाने में बन्द कर दिया है। किसी मंदिर में बैठा देंगे, किसी मंच पर बैठा देंगे, जय-जयकार करेंगे समाज और उसके बीच में फासला खड़ा कर देंगे। दीवार बना देंगे और कहेंगे कि इधर मत आना और हम उधर नहीं आयेंगे। हम पूजा करेंगे, फूल फैकेंगे बीच में डिस्टैंस रहेगा। और यह हम इंतजाम कर लेंगे। मन्दिर यह सब अच्छे किस्म के पागलों को कैद करने का इंतजाम किया हुआ है 'आश्रम' और 'पागलखाना'। आश्रम को भी हम गांव के बाहर बनवा देते हैं कि कृपा करके इधर ज्यादा मत आना। हमको ही कभी पागलपन की खुजलाहट होगी तो हम उधर चले आयेंगे। आप कृपा करके इधर नहीं आयेंगे। एक पागलखाना बनाया वहां हम खतरनाक किस्म के पागलों को बन्द करते हैं लेकिन पागलपन का मतलब ही यह होता है कि आदमी को वस्तुतः स्थिति दिखाई नहीं पड़ती, आदमी जो चाहता हैं वही देखने लगा।

अगर हम दस भक्तों को एक ही कमरे में बन्द कर दें। एक जीसस का भक्त हो तो रात में जीसस से बातें करता रहेगा और कृष्ण का भक्त हो तो वो कृष्ण से बातें करता रहेगा, और राम का भक्त हो तो धनुष-धारी राम को देखता रहेगा। और तीनों को दूसरे के भगवान दिखाई नहीं पड़ेंगे। और सुबह झगड़ा भी हो सकता है कि कौन कहता है कि धनुर्धारी राम यहां थे। जीसस थे राम तो नहीं थे कृष्ण थे, कौन कहता है कि जीसस यहां थे वो तीनों लड़ेंगे कि इन तीनों का भगवान उन तीनों को ही दिखाई पड़ता है। ध्यान रहे कि सपने की एक क्वालिटी है, प्राइवेट होना। सपना जो है वो सदा प्राईवेट होता है। सपना कभी सामूहिक नहीं हो सकता। अगर इस चीज को देख लें, तो अभी जो हम देख रहे हैं वह सामूहिक है। लेकिन अगर मैं कोई सपना देख रहा हूं तो आपको उसमें साझीदार नहीं बना सकता। कोई भक्त अपने सपने में साझीदार नहीं बना सकता और कोई पागल भी किसी को अपने पागलपन में साझीदार नहीं बना सकता। सब प्राइवेट है। इसलिए प्राइवेट चीज से थोड़ा सावधान रहना, उसमें थोड़ा खतरा है उसमे डर यह है कहीं वह सपना ही न हो। उसमें डर यह है कि कहीं वह ऐसी बात न हो जो हमने कल्पित कर ली हैं। और हम कल्पित कर रहे हैं। नहीं! न तो कोई देवी-देवताओं को देखने से अध्यात्म का कोई संबंध है। न राम, कृष्ण, बुद्ध को देखने से कोई संबंध है। इनसे कोई संबंध नहीं। संबंध किसी और बात से है। देखना है उसे जो सब को देख रहा है। दृश्य को नहीं देखना है। दृष्टा को। अध्यात्म का संबंध नये नये दृश्य पैदा करना नहीं है। अध्यात्म का संबंध सभी दृश्यों से पूरा करके उसे देखना है जो सदा देखता रहा है। हम इस टाकीज में बैठे हुए हैं इसमें एक पर्दा है और मशीन चलती है फिल्म चलती हो एक बुरी फिल्म चलती हो। जैसे एक हत्यारे की कहानी है जो पर्दे पर चल रही हैं। फिर एक अच्छी फिल्म चलती हो एक संत का जीवन चल रहा हो वह भी पर्दे पर चलता है। दोनों हालतों में आप सिर्फ देखने वाले हैं। और पर्दे पर कहानी चल रही है अच्छी चले, बुरी चले तमाशबीनों को चले या त्याग तपश्चर्या की चले लेकिन पर्दे पर चल रही है। दृश्य पकड़ें नहीं, अध्यात्म का संबंध बुरी कहानी को मिटा के अच्छी कहानी रखने से नहीं अध्यात्म का संबंध कहानी हटा के

पर्दा खाली करने से है। ताकि पर्दा खाली हो जाय और देखने को कुछ न बचे और ताकि आप अपने पर लौटें, और उसे देख पायें जो अब तक सिर्फ देखता ही रहा है, लेकिन अपने को जो किसी ने नहीं पहचाना मैं कौन हूं ? जो देखता है वो कौन है ? नहीं, महत्वपूर्ण यह नहीं है कि राम दिखाई पड़ते हैं महत्वपूर्ण यह है कि वह राम जिसको दिखाई पड़ते हैं वह कौन है ? और उसे देखना हो तो राम को भी कहना पड़ेगा हाथ जोड़ करके कि अब तुम धनुष बाण उठाओ और कृपा करके चले जाओ। इधर बाधा मत दो, अगर बुद्ध खड़े हों तो उनसे भी कहना पड़ेगा कि अब बहुत देर हो गई है अब जायें। अगर जीसस भी सूली पर न मारते हों और लटकते ही चले जाते हों उनसे कहना आप बन्द करिये अब सूली भी अपनी ले जाइये और आप भी जाइये।

मुझे उसे जानना है जो देख रहा है मैं अब दृश्यों में खुश नहीं हूं, लेकिन हमारा मन है बचकाना वो दृश्य बदल देता है अधार्मिक दृश्य देखने वाला है आदमी धार्मिक दृश्य देखने वाले लोग भी हैं लेकिन कोई फर्क नहीं, दृश्य में ही उलझे हैं। सवाल इस क्रांति का है कि दृश्य के चित्त से विदा हो जायें, और द्रष्टा पर पहुंच जायें। देखने वाले पर पहुंच जाऊं मैं, फिर वहाँ क्या दिखाई पड़ेगा। वहाँ राम दिखाई पड़ेंगे कि बुद्ध कि महावीर ? नहीं वहां मैं ही दिखाई पड़ूंगा और मन यह है कि जो मैं हूं जिस दिन मैं उसे जान लूंगा उस दिन मैं राम को, कृष्ण को, बुद्ध को, मुहम्मद को सब को जान लूंगा क्योंकि जो मैं हूं मेरा जो बहुत आन्तरिक स्वभाव है वही वह है।

राम को और कृष्ण को भी हम दृश्य की भांति खड़ा करके नहीं जान सकते, उनको भी मैं अपने ही दृष्टा स्वरूप को अनुभव करके जान सकता हूं अन्यथा नहीं जान सकता मैं। जरथुस्त पहाड़ से उतर रहा है और उसके शिष्य ने उससे कहा है कि हमें अन्तिम संदेश दे दो। जब वह विदा हो रहा है उसने कहा शिष्यो मुझे छोड़ो मैं जाता हूं। एक वक्त आना चाहिए कि गुरु इतनी हिम्मत जुटा सके कि शिष्यों से कह सके कि कृपा करके मुझे अब छोड़ो जाने दो, शिष्य में भी इतनी हिम्मत होनी चाहिए कि एक दिन गुरू से कह सके कि कृपा करके हमें छोड़ो मैं जाता हूं। लेकिन गुरुओं में इतनी हिम्मत होती, न शिष्यों में। वो एक दूसरे को पकड़े बांधे रहते हैं। और खुद भी डूबते हैं और दूसरे को भी डुबोते हैं। जरथुस्थ ने शिष्यों से कहा कि कृपा करके लौटो। अब मुझे जाने दो। शिष्य कहने लगे कि थोड़ी देर और सांस ले लो जरथुस्थ ने कहा कि नहीं और तुमसे भी मैं निवेदन करता हूं कि तुम मुझे भूल जाना क्योंकि जब तक तुम मुझे याद करोगे तब तक आप अपने को कैसे पाओगे।

एक जरथुस्थ हिम्मतवर आदमी रहा होगा। किसी से यह कहना कि मुझे भुला देना, मैं खतरनाक आदमी हूं। जरथुस्थ ने कहा कि तुमने अगर मुझे पकड़ लिया तो अपने को कैसे पहचान पाओगे ? तुम भी मुझे जाने दो तुम भी मुझे छोड़ो।

एक जेन फकीर हुआ है बोकोजू। वह अपने शिष्यों से कहा करता कि बुद्ध से सावधान रहना। बी व्हेयर आफ बुद्धा (Beware of Buddha) क्यों इससे क्या मतलब ? वो कहता है कि बुद्ध से जरा सावधान ही रहना। क्योंकि जब सब छूट जायेगा तब बुद्ध खड़े हो जायेंगे। और तब तुम अटक जाओगे। अटकना कहीं भी नहीं अगर कहीं भी अटके तो अटकना हो जायेगा। इससे क्या फर्क पड़ता कि यह खूंटी सोने की है या लोहे की है, अटकने का सवाल है। नहीं, खूंटियाँ तोड़ देना। उसने कहा कि बुद्ध से सावधान हो जाना और अगर बुद्ध बीच में आयें तो धक्का देकर अलग कर देना। और कहना कि अपना रास्ता में। मुझे मुझ तक पहुंचने दीजिये। मेरे बीच में मत आइये और मजा यह है कि जिस दिन हम अपने पर पहुंचेंगे। उसी दिन बुद्ध पर पहुंच जायेंगे। राम और कृष्ण पर पहुंच जायेंगे। और जब तक हम दृश्य में उलझे रहेंगे और तब तक यह संभव नहीं है। नहीं सपने मत देखिये सुन्दर सपने भी मत देखिये। बहुत सपने देखे। सत्य को देखिये और सत्य वह है जो देख रहा है सत्य वह नहीं

है जो दिखाई पड़ रहा है। द्रष्टा सच है और दर्शन और दृश्य सब सपना है।

इसलिए मैं नहीं कहता कि देवी देवताओं की चिन्ता में पड़िये, कि काली मां को देखिये, बनाइये, मन में संजाइये, मन में हाथ जोड़ करके खड़े होइये भीतर और फिर उसका जाप करते रहिये कुछ भी नहीं होगा इससे कुछ मतलब नहीं। कोई प्रयोजन नहीं, बहुत हो चुका है। आदमी का मन सदियों से यह करता रहा और आदमी कहीं भी नहीं पहुंच सका। नहीं अब सपने छोड़ देने पड़ेंगे। अपने को ही जानना पड़ेगा, लेकिन बहुत कठिन तो है ही। कठिन तो यह है कि हम उन सपनों में खो जाते हैं। फिल्म चलती है तो हम यह भूल जाते हैं कि यह जो चल रहा है पर्दे पर, वहाँ कुछ भी नहीं है। एक सुन्दर स्त्री आती है और हमारी पीठ जो है कुर्सी छोड़ देती है हम आगे झुक जाते हैं। देखा आपने हाल में वह सुन्दर स्त्री क्या है, पर्दे पर कुछ भी नहीं। सिर्फ धूप छाँव का खेल, कुछ नहीं है सिर्फ प्रकाश के कम और ज्यादा फेंकने की तरकीब है कहीं प्रकाश ज्यादा पड़ रहा है कहीं कम पड़ रहा है। और यह खेल बन गया है। वह स्त्री बन गई है और आप समझ रहे हैं कि सुन्दर स्त्री आ रही है। अगर कोई मरता है तो आपकी आँखों में आँसू भी आ जाते हैं, इसलिए हाल में अंधेरा बड़ा सहयोगी होता है। झट से रूमाल से पोंछ लिया और बगल वाले को देख लिया कि उसने कहीं देखा तो नहीं। लेकिन किसी ने न देखा हो आपने तो देख ही लिया। पर्दा धोखा दे गया। एक कहानी चलती थी आप रो भी लिए और हंस भी पड़े और परेशान हो लिए और था कुछ भी नहीं, खाली पर्दा है वहाँ उस पर्दे पर धूप छाँव का खेल है। बहुत गहरे में जिन्दगी भी एक पर्दा है और धूप छाँव का खेल है? लेकिन वहाँ भी रोना है धोना है।

एक बहुत विचारशील आदमी हुए हैं, विद्यासागर। एक नाटक देखने गए। बड़े सात्विक आदमी थे और वे यह देख न सकते थे, जिनको हम साधु पुरुष कहें वो ऐसे थे। सामने ही बैठे थे नाटक चलता था और नाटक की कहानी में एक पात्र है और वह एक स्त्री को परेशान करता है वह करता ही चला जा रहा है सब तरह से स्त्री को परेशान किये चले जा रहा है। आखिरी चरम सीमा वहाँ आती है कथा में। वहाँ एक जंगल में एकांत में रात्रि में वह स्त्री को पकड़ लेता है वह उससे व्यभिचार करना चाहता है। बस विद्यासागर भूल गये छलाँग लगा कर चढ़ गए मंच पर निकाला जूता और लगे मारने उस आदमी को। बुद्धिमान भी बड़े कम बुद्धिमान होते हैं। विद्यासागर थे लेकिन भारी अविद्या हो गई। वो जो आदमी जो था जो अभिनय कर रहा था उसने ज्यादा बुद्धिमानी प्रकट की। सच में अगर कोई अभिनेता ठीक से अभिनय करे तो बुद्धिमान हो जाता है। क्योंकि अभिनय करने का मतलब होता है कि वह जानता है कि जो कर रहा हूं झूठ कर रहा हूं। वह सब झूठ है। धीरे-धीरे उसे यह भी दिखाई पड़ने लगता है कि बाहर भी जो कर रहा हूं वो झूठ है फिल्म में कहते कहते कि मैं तुम्हें बहुत प्रेम करता हूं और जानता है कि बिल्कुल नहीं करता। जब वह अपनी पत्नी से कहता है कि मैं तुम्हें बहुत प्रेम करता हूं तब भी जान लेता है कि नहीं करता हूं एक लम्बा अभिनय चलता है। वह अभिनेता बहुत बुद्धिमान निकला उसने विद्यासागर का जूता लेकर सर पर लगा लिया और उसने लोगों से कहा कि इससे बड़ा पुरस्कार जीवन में कभी नहीं मिला है। मेरा नाटक इतना सच्चा मालूम पड़ सकता है? वो भी विद्यासागर को? यह जूता वापिस नहीं लौटाऊंगा। विद्यासागर की मुसीबत तो बहुत हो गई होगी, बेचारे कैसे मंच से उतरे होंगे, कैसे कुर्सी पर वापिस बैठे होंगे, कैसी बैचेनी हुई होगी, भूल गए। एक क्षण में हम सब भूल जाते हैं। नाटक चलता है पर्दे पर तो भी हमें पकड़ लेता है। दृश्य ने हमें इतना पकड़ा है कि हमारी पूरी जिन्दगी दृश्यों में ही बीत जाती है। दिन भर सपना है रात भर सपना है और हमें द्रष्टा का कभी पता ही नहीं चलता वो जो चल रहा है। जिस दिन हमें पता चल जायेगा उसका जो देख रहा है उस दिन सब दृश्य सपने हो जायेंगे देवी-देवता ही नहीं वो

जगत जो हमारे चारों ओर फैला हुआ है वह जगत भी हमारे सपने का एक हिस्सा होगा, काली और राम और कृष्ण ही नहीं पति-पत्नि, शत्रु और मित्र भी एक नाटक के बड़े हिस्से हो जायेंगे।

मैं छोटा था तो अपने गांव रामलीला देखने जाता था। मैं सदा हैरान होता था कि वहां पीछे क्या होता होगा पर्दे के पीछे ? जो है वहां वो ग्रीन रूम है वहां क्या होता होगा ? क्योंकि सारे लोग वहीं से आते हैं राम भी वहीं से आते हैं और रावण भी वहीं से निकलते हैं, एक ही दरवाजे से। मैं सदा चकित होता था कि दरवाजे के पीछे क्या राज है ? राम भी वहां से आते हैं रावण भी वहीं से आता है, सीता को चुराने वाला भी वहीं से आता है, सीता को बचाने वाला भी वहीं से आता था। सीता भी वहीं से आती है और फिर तीनों वहीं चले जाते हैं उस कमरे में क्या होगा ? तो पीछे का पर्दा उठा कर उस ग्रीन रूम मे घुस गया वहां तो मैं बड़ा चकित हुआ कि वो जो राम रावण बाहर बड़ा युद्ध कर रहे थे वो बैठ के सिगरेट पी रहे हैं गपशप कर रहे हैं। मैंने कहा यह तो बड़ा आश्चर्यजनक मामला है। बाहर तो यह बड़ा धनुषबाण खीच कर और पैर पटक कर बातें करते हैं यहां सिगरेट पी रहे हैं।

तब से मुझे निरन्तर यह ख्याल रहा है कि जिंदगी के पर्दे के पीछे भी कोई आश्चर्य नहीं है कि राम और रावण बैठे सिगरेट पीते हों। कोई बहुत आश्चर्य नहीं क्योंकि जिन्दगी के पर्दे पर भी हम एक ही जगह से आते हैं और एक ही जगह वापिस लौट जाते हैं। ग्रीन रूम एक ही है। पर्दे पर आना जाना होता रहता है। पीछे लौटते आते एक ही रास्ता है। उसी अंधकार से आते हैं जन्म के और मृत्यु के उस अंधकार में हम लौट जाते हैं। पर्दे के पीछे राम और रावण में कोई फर्क नहीं है।

इसलिए जो जानते हैं वो इस जगत को लीला कहेंगे नाटक कहेंगे, जो जानते हैं जगत को खेल कहेंगे, लेकिन यह जगत लीला तब होगा जब हमें दृष्टा का थोड़ा सा ख्याल आ जाये। नहीं तो लीला ही सत्य हो जाती है नाटक भी सत्य हो जाता है और सपना भी सत्य हो जाता है। क्या आपने कभी ख्याल किया कि सपने में जो मैं देख रहा हूं वह सपना नहीं सत्य है। कितनी दफा सपना देखा जिन्दगी में रोज रोज सुबह उठकर कहते हैं कि सपना है। फिर रात सोते हैं और फिर सपना देखते हैं लेकिन सपने में यह ख्याल नहीं आता है कि यह जो मैं देख रहा हूं वह सपना है। फिर सपना पकड़ लेता है। फिर सुबह उठते हैं और कहते हैं कि सब सपने हैं रात फिर आती है और सपना फिर शुरू हो जाता है। सपने की पकड़ बड़ी गहरी मालूम पड़ती है। हजार हजार अनुभव के बाद भी सपना आता है वो एकदम पकड़ लेता है सपना सच हो जाता है। ध्यान रहे जब सपना सच होता है तो आप झूठे हो जाते हैं तो दो में एक ही चीज सत्य हो सकती है या दृश्य या दृष्टा। जब दृश्य सत्य हो जाता है तो दृष्टा झूठा हो जाता है, पता ही नहीं चलता। सुबह जब आप जागते हैं और दृष्टा की तरफ देखते हैं तो पता चलता है कि वो सपना है झूठा है। आप जब सोते हैं दृष्टा सो जाता है सपना सच हो जाता है।

दुनिया में दो ही तरह के लोग है एक वे जिनको दर्शन सत्य हैं दृश्य सत्य है और एक वे जिन्हें दृष्टा सत्य है। दोनों एक साथ सत्य नहीं हो सकते। कभी हुए नहीं। इसलिए जिन्होंने कहा है कि जगत माया है उनका मतलब और है उनका मतलब केवल इतना है कि यह केवल सपना है उनका मतलब केवल इतना है कि दृश्य है और जो देख रहा है वो गहरे से गहरे में सत्य है सबसटेंशियल। तात्विक वह है जो देख रहा है जो दिखाई पड़ रहा है वो अभी है, अभी मिट जायेगा वो अभी बना है अभी खो जायेगा। लेकिन देखने वाला, रात जब मैं सपना देखता हूं मैं तब भी होता हूं नहीं तो सुबह कौन याद करेगा। सपना तो मिट जाता है लेकिन मैं बच जाता हूं सुबह। दिन भर सपना देखता हूं तब भी मैं होता हूं रात दिन भर का सब सपना खो जाता है लेकिन

मैं फिर बच जाता हूं। बच्चा था तो मैंने बचपन का सपना देखा। लेकिन अब जवान हूं तो जवानी का सपना देख रहा हूं मैं बूढ़ा हो जाऊंगा तो बूढ़ा होने का सपना देखूंगा तब भी मैं रहूंगा। बचपन में, जवानी में बुढ़ापे में सपना रोज बदलता रहेगा लेकिन देखने वाला रोज वही है। वही है। वही है।

एक है जो बदल रहा है। एक वह है जो अनबदला देख रहा है, धर्म आध्यात्म उसकी खोज है। जो देख रहा है, संसार उसकी खोज है जो दिखाई पड़ रहा है। जो दिखाई पड़ रहा है, उसकी खोज में गया वह भटकता चला जायेगा, क्योंकि दिखाई पड़ने वाला प्रतिपल बदल रहा है। आप खोजेंगे कैसे ? आप जब तक पहुंचेंगे तब तक सब बदल चुका है।

एक छोटी सी कहानी और अपनी बात मैं पूरी करूंगा। गांव में एक आदमी था, किसी। बहुत चालाक, बहुत होशियार, गांव के लोग किसी मुसीबत में पड़ जाते तो उससे सवाल पूछने आते वो चालाक होशियार आदमी था। अपना ताला भी लगाता तो दो तीन बार लौट कर हिला कर देख लेता। सचमुच लगा है न। एक दिन नाई बाड़े मे बाल बनवाने गया था, बाल तो बनवा लिये तो क्या दिया, आठ आने होते थे, आठ आने नाई के पास वापिस करने को न थे। नाई ने रुपया तो जेब में रख लिया और कहा कि कल बाजार आयें तो बाकी ले लेना। उस आदमी ने कहा कि पता नहीं यह आदमी कल तक नाई रहे या न रहे जमाना बड़ा खराब है। कोई शर्मा लिखते कोई वर्मा लिखते। पक्का पता नहीं नाम बदल ले जाति बदल ले दुकान बदल ले, यहां सब बदल रहा है इसका कुछ पक्का पता नहीं। अभी आदमी चीफ मिनिस्टर था अभी चपरासी है और अभी चपरासी है अभी चीफ मिनिस्टर हो जायगा। तो जहाँ पक्का नहीं है वहां सब गड़बड़ हो गया है। और इस नाई का क्या भरोसा है कि कल आठ आने दे या न दे। तो कुछ पक्का इंतजाम कर लेना चाहिए, कि इसका पक्का पता रहे। बोर्ड बदलने में कितनी देर लगती है। जमात बदल लेता है, एक आदमी कांग्रेसी है मिनट में गैर कांग्रेसी हो जाता है। तो बोर्ड तो बदल सकता है और अगर यह बदल ले तो गड़बड़ हो गई और आठ आने गये। वह आदमी जो ताला तीन दफा हिलाता था वो साधारण आदमी न था। उसने कहा कि कुछ ऐसा ही इंतजाम करो कि जिससे यह बदल ही न सके। और इंतजाम कर लिया। एक भैंस उस नाई बाड़े के सामने बैठी थी उसने कहा कि ठीक है इसको क्या पता कि भैंस यहां बैठी है। कल जहां भैंस बैठी होगी हम फौरन पकड़ लेंगे कि ले बेटा कितना ही बदलो। कल वह आया, भैंस बैठी थी आज भी बैठी थी देखा उसने और कहा ठीक किया कि जो हमने भैंस से सम्बन्ध बांधा हद हो गई बोर्ड तो बदल ही लिया कल यहां नाई बाड़ा देखा था आज वहां मिठाई वाला लिखा है कल जहां नाई की दुकान थी आज वहाँ मिठाई बिक रही है। उसने कहा कि हद हो गई कि हमने भी ठीक ही किया जो भैंस को ख्याल में रखा। अगर बोर्ड पर ख्याल करते तो फंस ही जाते। अन्दर जाकर उसने लपक के मिठाई वाले की गर्दन पकड़ ली और कहा कि हद कर दी तूने भी। आठ आने के पीछे इतनी बदलाहट करनी पड़ती है। उस मिठाई वाले ने कहा कि आप बात क्या करते हैं ? तो उसने कहा कि गड़बड़ मत कर मैं ऐसा पक्का इन्तजाम करके गया हूं, वह भैंस बाहर बैठी है अभी। अब भैंस का क्या भरोसा है कि वो वहाँ बैठी रहे।

हम जिन्दगी भर दृश्यों के लिए भाग रहे हैं। दृश्यों का कोई पक्का भरोसा है कि वो वहीं रहेंगे ? क्या वही सपना आज रात फिर देख सकते हैं जो आपने कल देखा था। उपाय करके देखें कितना भी उपाय करके देखें दुबारा देखना मुश्किल हो जाता है। वहाँ दुबारा नहीं है। कल जिस पत्नो से आप मिले थे आज फिर उससे मिल सकते हैं दुबारा ? आशा रखते हैं इसी से दिक्कत होती है। कल जो स्त्री थी वह आज कहाँ है। गंगा का बहुत पानी बह गया। कल उसने प्रेम किया था हो सकता है वह आज गाली दे। मुश्किल होगी मन

में यह कैसी औरत है कल प्रेम की बात करती थी आज गाली देती है।

आप भैंस को पहचान करके घर चले गए थे। आपने जो चीज पकड़ी थी वह बदलने वाली थी स्त्री भी बदलेगी, बेटा भी बदलेगा। माँ अपने बेटे से कहती है कि शादी होने के बाद इतना बदल गया। कल तक मेरी गोद में सिर पटकता था, अब मेरी तरफ देखता ही नही। भैंस को पकड़ लिया अब मुश्किल में पड़ गया। अब तो बेटा किसी और स्त्री की गोद में सिर रखता है। वह कब तक तुम्हारी गोद में सिर रखेगा। बदलने वाले को पकड़ कर हम बड़ी झंझट में पड़े हुए हैं, चौबीस घंटे। वह बदलने वाला बदला जा रहा है। कोई उपाय नहीं ऐसा नहीं कि वह ही बदला जा रहा है, हम भी बदले जा रहे हैं। जहाँ दृश्य की दुनिया है वहाँ सब बदल रहा है। वहाँ कुछ भरोसा नहीं है। तो जो दृश्य की खोज में दौड़ रहा है वह सदा पीड़ा में और दुःख में रहेगा और ऐसा नहीं कि हम ही दौड़ रहे हैं। बड़े बुद्धिमान दौड़ जाते हैं। अब रामचन्द दौड़ गए स्वर्णमृग के पीछे। हम भी एक दफा सोचते कि सोने का हिरण होता भी है। लेकिन राम दौड़ गए सोने का हिरण देख करके, सीता को भी जी हुआ कि ले आओ पकड़ करके। सोने के मृग के पीछे राम भी दौड़ जाते हैं। सोने का हिरण कहीं होता है? लेकिन राम दौड़ जाते हैं हम भी दौड़ पड़े असल में हमारे भीतर भी राम ही दौड़ रहे हैं। दौड़ेगा कौन, स्वर्ण मृग दिखाई पड़ रहे हैं कि दौड़ चले जा रहे हैं। दृष्टा भी एक दुनियाँ है। जहाँ हम दौड़ते दौड़ते हैं। न जाने कितने अनन्त काल से दौड़ रहे हैं। लेकिन कब तक दौड़ते रहिएगा? क्या अभी काफी दौड़ नहीं हो गई? समय नहीं आ गया है कि जो दौड़ रहा है उसे पहचानें। जो देख रहा है। अगर समय आ गया है उसे पहचानने का तो नई दौड़ न बनाए। देवी देवताओं की इसकी-उसकी। नहीं अब नई दौड़ नहीं चाहिये। अब दौड़ कर ठहरना चाहिये। उसे देखना है। जो सब दौड़ को सदा देखता रहा है। समाधि उसका द्वार है। मेरी बातों को इतने प्रेम और शांति से सुना उससे अनुग्रहीत हूं अन्त में आप सबके भीतर बैठे परमात्मा को प्रणाम करता हूं मेरे प्रणाम स्वीकार करें।

(पूज्य आचार्य श्री का २४ फरवरी १९७० को अमृतसर में हुआ एक प्रवचन)

आचार्य श्री के आगामी देश व्यापी कार्यक्रम

दिनांक	स्थान	कार्यक्रम	सयोजक
२० जुलाई ७०	बंबई	सत्संग	श्री ईश्वर भाई, C/o जीवन जागृति केन्द्र, रूम नं० ५३, एम्पायर बिल्डिंग, डा० डी० एन० रोड, बंबई : १ फोन : २६४५३०
२८, २९, ३० एवं ३१ जुलाई ७०	बड़ौदा	प्रवचन	श्री चंद्रकांत पटैल, 'आसोपालव' बैंक आफ इंडिया के सामने, रायपुरा, बड़ौदा

नियम संख्या ८ के अनुसार 'युकांद' के स्वत्वाधिकार संबंधी व अन्य विवरण

: फार्म ४ :

१.	प्रकाशन का स्थान	:	कमला नेहरू नगर
२.	प्रकाशन आवृत	:	पाक्षिक
३.	मुद्रक	:	अरविन्द कुमार, कमला नेहरू नगर, जबलपुर
४.	प्रकाशक	:	अरविन्द कुमार
५.	संपादक	:	अरविन्द कुमार
६.	मुद्रक, प्रकाशक व संपादक की राष्ट्रीयता	:	भारतीयता
७.	स्वत्वाधिकारी	:	अरविन्द कुमार

मैं अरविन्द कुमार प्रमाणित करता हूं कि मेरे ज्ञान और विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य है।

जबलपुर
दिनांक : १ जुलाई, ७०

हस्ताक्षर
अरविन्द कुमार

जीवन संगीत से आलोकित : नई साज सज्जा में

ज्योति शिखा

(आचार्य श्री के विचारों की आध्यात्मिक त्रैमासिकी)

संपादक : श्री महिपाल

मूल्य : वार्षिक : ५ रु०
एक प्रति : १)२५ न० पै०

प्रकाशक : जीवन जागृति केन्द्र,
रूम नं० ५३, एम्पायर बिल्डिंग,
डा० डी० एन रोड, बंबई : १

Phone : 293070
Cable : Vidushak
Bombay

We Assure Our Best Services
For All Time
To Come
WITH BEST COMPLIMENTS
FROM

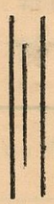

ASSOCIATED BUSINESS CORPORATION

Court Chambers, 2nd Floor
35, New Marine Lines,
Bombay - 20 BR.

Gram - Newkumar

Phone - 251868
297463

EMKAY TRADERS

Stockists of Imported & Indian
Spare Parts for Diesel Engines
& Tractors

*

Specialists In

FUEL INJECTION EQUIPMENTS

Authorised Dealers For :

'MOTOR PAL' Fuel Injection Equipments

Western brand Cylinder Liners

9-OAK Lane,
Bombay-1

*

Kwality

ICE CREAM

90-A, Industrial Area, Ludhiana

ANNOUNCE THE APPOINTMENT OF THE FOLLOWING PARTIES
AS THEIR WHOLESALE AGENTS FOR ICE CREAM

1. M/s Kishore & Co., 4-A, Lawrence Road, Amritsar.
2. M/s Emkay Traders, Chandra Buildings, Jullundhur.
3. M/s Kwality Ice Cream Centre, Canal Road, Jammu
4. M/s Upkar Agencies, Dharampura, Patiala.
5. M/s Subhash Coffee Bar, Moga.
6. M/s Sood & Co. Sadar Bazar, Ambala.

THE PARTIES INTERESTED FOR SUB AGENCIES
IN THE ABOVE NOTED STATIONS MAY CONTACT THESE FIRMS

वर्षों से हम

अपनी श्रेष्ठतम सेवायें

प्रस्तुत कर रहे हैं

धुम्रपान के अनोखे आनंद के लिये

नंबर

22

छाप बिड़ी

पीजीये.

निर्माता वृजलाल मणीलाल एन्ड कं. गोंदिया.

STRESSCON CORPORATION

FOR

ANYTHING & EVERYTHING

IN

PRECAST PRESTRESSED CONCRETE

CONSTRUCTION

202, Lal Bahadur Shastri Marg,

Ghatkopar,

Bombay - 86 AS

Telephones : 582593 & 582594

तुलसी मानस प्रकाशन की उपलब्धियाँ

१. पीस आफ माइण्ड (अंग्रजी में) रु० ३)

२. क्वायटर मोमेण्ट्स (अंग्रेजी में) रु० २)

३. संसार का सार (मू० रु० ३) (हिन्दी में) आधुनिक खेलों, वैज्ञानिक साधनों, जीवजन्तुओं वनस्पतियों आदि के द्वारा अध्यात्मक शिक्षा देने का विवेचन ।

४. ज्ञान साधना (मू० रु० २) लोनावला शिविर में पधारे हुए महापुरुषों के ज्ञानसाधना के प्रति संकेत ।

५. विज्ञान से ज्ञान (मू० रु० १) ऐक्सरे इत्यादि आधुनिक उदाहरणों को लेकर अध्यात्मविद्या नव-युवकों तक पहुंचाने का सफल प्रयास ।

६ वेदान्त नवनीत (मू० रु० १–५०) सन् १९६४ के अमृतसर के वेदान्त सम्मेलन में पधारे महात्माओं के प्रवचनों का सार ।

७. वेदान्त का सरल बोध (मू० रु० १)

८ आध्यात्मिक पिक्टोरियल (हिन्दी व अंग्रेजी) (मू० रु० ३) ज्ञान की गंभीर बातों को सूत्र तथा चित्र द्वारा प्रस्तुत ।

९. मुमुक्षु आध्यात्मिक उपन्यास (मू० रु० ५)

१०. मन की शांति (पद्य) (मू० रु० ४) अंग्रेजी मूल रचना 'पीस आफ माइंड' का हिन्दी अनुवाद ।

११. हमारी परंपरा (मू० रु० २)

१२. आराम सुख शांति और आनन्द (मूल्य ५० पैसे)

१३. अपनी ओर इशारा (मूल्य १ रु०) अपनी ओर आने के सूत्र रूप इशारे ।

१४. आध्यात्मिक डायरी (मू० ५ रु०) सचित्र और दार्शनिक सूत्रों से परिपूर्ण दैनंदिनी ।

१५. व्यवहारिक जीवन और परमात्मा (मू० रु० १) (प्रेस में)

१६ श्मशान यात्रा (मू० ५० पैसे)

१७. मेरे १०८ गुरु (मू० रु० ३)

१८. सजगता (मू० रु० १) (प्रेस में)

१९. विरोध–निरोध और स्वबोध (मू० रु० १) (प्रेस में)

२०. वेदान्त का वैज्ञानिक मनन (मू० रु० १)

तुलसी मानस प्रकाशन

अन्तर्गत विभाग केवल मार्कीटिंग कम्पनी

गुप्ता मिल्स स्टेट, रे रोड,

बम्बई---१०

आचार्य श्री का प्रकाशित साहित्य

	हिन्दी	गुजराती	मराठी
१. साधना पथ	३.००	३।००	३।००
२. क्रांति बीज	३।००	२।५०	२।५०
३. सिंहनाद	१।५०	१।२५	३।००
४. मिट्टी के दिए	३।००	३।५०	
५ पथ के प्रदीप	३।००	३।८०	८।००
६. संभोग से समाधि की ओर	३।५०	३।५०	—
७. आचार्य रजनीश समन्वय, विश्लेषण, संसिद्धि	७।५०	—	—
८. मैं कौन हूं ?	२।००	२।००	—
९ नए संकेत	२।००	१।७५	—
१० अज्ञात की ओर	२।००	२।००	—
११. सत्य की खोज	३।००	—	—
१२. अंतर्यात्रा	३।५०	—	—
१३. शांति की खोज	२।००	—	—
१४. सत्य के अज्ञात सागर का आमंत्रण	१।२५	१।५०	—
१५. सूर्य की ओर उड़ान	१।००	१।००	—
१६. प्रेम के पंख	०।७५	०।७५	०।७५
१७. कुछ ज्योतिर्मय क्षण	१।००	०।७५	—
१८. अमृत कण	०।६०	०।५०	०।५०
१९. अहिंसा दर्शन	०।५०	०।५०	०।५०
२०. नई दिशा, नई बात	०।३०	—	—
२१. सत्य की पहली किरण	६।००	—	—
२२. प्रभु की पगडंडिया	४।००	—	—
२३. क्रांति के बीच सबसे बड़ी दीवार	०।३०	—	—
२४. बिखरे फूल	०।३५	—	—
२५. जीवन और मृत्यु	—	१।००	—
२६. नए मनुष्य के जन्म की दिशा	०।७५	०।७५	—
२७. अस्वीकृति में उठा हाथ (भारत, गांधी और मेरी चिंता)	५।००	—	—

प्राप्ति स्थल :

[१] जीवन जागृति केन्द्र, रूम नं. ५३, एम्पायर बिल्डिंग, डा० डी. एन. रोड, बंबई : १

[२] मोतीलाल बनारसी दास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली–७।

[३] स्वदेशी वस्तु भंडार, जामनगर।

[४] आर. अंबानी एंड कं०, अपोजिट : जिमखाना, राजकोट।

[५] चंद्रकांत पटैल, आसोपालव, बैंक आफ इंडिया के सामने, रावपुरा, बड़ौदा।

[६] मोतीलाल बनारसी दास, नेपाली खपरा वाराणसी।

[७] मोतीलाल बनारसीदास, अशोक राजपथ, पटना।

[८] भारतीय संस्कृति भवन, माई हीरांगेट जलंधर शहर।

[९] नरसिंह भाई पटैल, सहकारी मुद्रणालय, कोठारी मार्ग, सुरेंद्रनगर।

[१०] सस्तु किताब घर, पथ्थर कुवां, रिलीफ रोड, अहमदाबाद।

[११] बालगोविंद कुबेरदास, गांधी रोड, अहमदाबाद।

[१२] सर्वोदय साहित्य भंडार, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर—२

[१३] हीराभाई मेहता, पांचघर, ७०, नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता : १

[१४] सुषमा साहित्य मंदिर, जवाहरगंज, जबलपुर।

[१५] युनिव्हर्सल बुक सर्विस, सिटी कालेज के सामने, जबलपुर।

[१६] श्री आर. के. पुंगालिया, १०१, टिम्बर मार्केट, पूना–२

[१७] श्री महेन्द्र कुमार मानव, विन्ध्याचल प्रकाशन, छतरपुर (म० प्र०)

[१८] श्री सौभाग्यचंद्र तुरखिया, २ प्रभात सोसाइटी, सुरेन्द्र नगर।

उत्तम तम्बाखू और कुशल कारीगरों से बनी

शेर और पहलवान छाप बिड़ी

भारत में अग्रणी है

मोहनलाल हरगोविंददास

जबलपुर म० प्र०

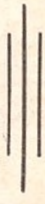

मानसेवी संपादक : अरविन्द कुमार । सह-संपादक : आलोक कुमार पाण्डे । व्यवस्थापक : श्री आर. आर. मिश्रा

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक : अरविन्द कुमार, कमला नेहरू नगर, जबलपुर ।

मुद्रण : श्रीपाल प्रिंटर्स, राजा गोकलदास महल, से मानसेवी संपादक अरविन्द कुमार के लिये मुद्रित

वर्ष : २ ।। अंक : १ ।। १ जुलाई १९७० ।। मूल्य : एक प्रति : ०.६० न० पै०

।। वार्षिक : १२ रु० ।।

PLASTICIZERS

For the

Plastics Paint & Perfumery Industries

DOP—Dioctyl Phthalate

DIOP—Di-iso Octyl Phthalate

DAP—Dialphanyl Phthalate

610 P—Dialfol 610 Phthalate

DBP—Dibutyl Phthalate

DMP—Dimethyl Phthalate

DEP—Diethyl Phthalate

Available from :-

Pioneers in manufacture of Phthalate Plasticizers.

INDO-NIPPON CHEMICAL COMPANY LIMITED

Alice Building, 339, D. N. Road, Bombay - 1

Gram-Plasticizer **Telex- Innipon 011 (2081)** **Phone - 251723 252269**